वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष :3 अंक : 152 | शुक्रवार 29 सितम्बर 2023 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

सत्ता के सुशासन की चाबी है धर्म-दंडः डॉ चन्द्रप्रकाश द्विवेदी

"धर्म-दंड, धर्म-राज्य एवं संवैधानिकता" विषय पर चाणक्य धारावाहिक के निर्माता

पंडित दीनदयाल उपाध्याय की स्मृति में किया गया व्याख्यान

जयपुर. शाबाश इंडिया

पं. दीनदयाल उपाध्याय स्मृति में ''धर्म-दंड, धर्म-राज्य एवं संवैधानिकता'' विषय पर आयोजित व्याख्यान के मुख्य वक्ता चाणक्य एवं उपनिषद गंगा धारावाहिक के निर्माता एवं अभिनेता पद्मश्री डॉ. चंद्र प्रकाश द्विवेदी ने कहा कि धर्म-दंड वस्तुतः सत्ता हस्तांतरण के प्रतीक के रूप में जाना जाता है। जैसा कि हाल ही में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने सिंगोल स्थापित कर इस प्राचीन व्यवस्था को पुनर्जीवित कर दिखाया। एकात्म मानव दर्शन अनुसंधान एवं विकास संस्थान के तत्वावधान में गुरुवार को जयपुर के बिड़ला सभागार में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि सत्ता के सुशासन की चाबी है धर्म-दंड। उन्होंने कहा कि धर्म-दंड को एक विद्यार्थी वेदों और संस्कृति की रक्षा के लिए धारण करता है सन्यासी ब्रह्मांड धारण करता है। सभी में समानता और आत्म तत्व का भाव देखने के लिए जबकि राजा धर्म-दंड को प्रजा के प्रतिनिधि के रूप में सुशासन कायम करने के लिए धारण करता है। इस विषय पर डॉ

चंद्रप्रकाश द्विवेदी ने कहा कि प्रजा पर शासन राजा नहीं धर्म-दंड करता है, जो कि धर्म, अर्थ और काम की रक्षा करता है। उन्होंने कहा कि आज सनातन पर बड़ी बहस छिड़ी हुई है। उन्होंने कहा कि शक्ति के आधार पर धर्म की कल्पना होती है तो महाभारत जैसे युद्ध होते हैं। अपने प्रस्तावना उद्बोधन में डॉक्टर महेश चंद्र शर्मा ने कहा कि स्वयंसेवक को राजनीति से अधिक रहना चाहिए जैसे की पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी समय राजनीतिक पद पर थे एक भाषण में उन्होंने कहा कि स्वयंसेवक को राजनीति से अलिप्त रहना चाहिए लेकिन जब उसे उनके पद के बारे में बात करके पूछा गया तो उन्होंने कहा मैं राजनीति में राजनीति के लिए नहीं बल्कि राजनीति में संस्कृति के राजदूत के तौर पर हूं। उन्होंने कहा कि भारत के राजतंत्र का विधि विधान है, धर्म-दंड 'सिंगोल' इसका प्रतीक है जो कालांतर में गुप्त हो गया था लेकिन इस प्राचीन परंपरा को अब पुनर्जीवित किया गया हैकउन्होंने कहा कि राजनीति में विधि का शासन होना चाहिए, सत्य बोलो सत्य का आचरण करो, धर्म का आचरण करो और स्वाध्याय करो क उन्होंने कहा कि भारतीय संविधान की सबसे बड़ी अच्छाई यह है कि यह अपने मनीषियों ने बनाया है इसमें हमेशा परिवर्तन होते रहे हैं और अब तक 122 बार इसमें संशोधन किया जा चुका है सच को जानना चाहिए, भारत की संविधान सभा वह संविधान नहीं बना सकी जो वह बनना चाहती थीक इसके पीछे अनेक कारण रहे लेकिन, संशोधनों के माध्यम से आज संविधान में सतत परिवर्तन किया जा रहे हैं जाते रहे हैं और जाते रहेंगेकडॉक्टर महेश शर्मा ने कहा कि संविधान सभा का मेंडेड 1935 का एक्ट और कैबिनेट मिशन था इसको लेकर स्वयं प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने कहा संविधान सभा वह नहीं है जो हम बनाना चाहते थे। कार्यक्रम संयोजक डॉ. एस एस अग्रवाल ने बताया कि एकात्म मानववाद पर पंडित दीनदयाल उपाध्याय स्मृति में प्रतिवर्ष ऐसे भव्य कार्यक्रम में आयोजित होते रहे हैकआज के कार्यक्रम में एकात्म मानवदर्शन एवं विकास प्रतिष्ठान के अध्यक्ष डॉ. महेश चन्द्र शर्मा और उनकी धर्म पत्नी का सार्वजानिक अभिनन्दन किया गया।

संत शिरोमणि दिगम्बराचार्य
श्री 108 विवेकसागर जी महाराज
निर्यापक श्रमण
मुनिपुंगव श्री 108
सुधासागरजी
महाराज
परम पूज्य निर्यापक श्रमण मुनि पुंगव श्री सुधासागर जी महाराज
41 वाँ दीक्षा दिवस
आगरा
रविवार, दिनांक 1 अक्टूबर, 2023
दोपहर 12.15 बजे से
आओ करें गुरु वन्दना
चले जयपुर से आगरा
स्पेशल डिलक्स एसी बसों द्वारा जयपुर की
विभिन्न शहर एवं कॉलोनियों से
दिनांक 1 अक्टूबर, 2023
प्रात: 5.00 बजे - जयपुर से प्रस्थान
सायं 7.30 बजे - आगरा से वापसी
सहयोग राशि : 200/- प्रति सवारी
बस पुण्यार्जक..
• श्री नन्दकिशोर जी महावीरजी प्रमोद जी पहाड़िया
• श्री उत्तम जी पाटनी
• श्री सम्पत जी संजय जी अजय जी पाण्ड्या (श्री जैन रोड़वेज)
• श्री अजय जी विजय जी संजय जी कटारिया
• श्री जम्बू कुमार जी दर्शन जी नवीन जी जैन बस्सीवाले
• श्री शैलेन्द्र जी गोधा (समाचार जगत)
• श्री मोहित जी राणा
संयोजक... • श्री प्रदीप जी लुहाड़िया
• श्री विनोद जी छाबड़ा 'मोन्'
निवेदक :
सकल दिगम्बर जैन समाज
जयपुर
: सीट बुकिंग हेतु सम्पर्क करें :
महावीर जैन (महावीर यात्रा कम्पनी)
94147-81315 / 98299-99436
अन्तिम तिथि : दिनांक 29 सितम्बर, 2023
जे.के.जैन (केवल मानसरोवर हेतु) 94140-42294

मानव हो तो मानव की तरह ही संसार में रहना पड़ेगा: मुनि पुंगव श्री सुधा सागर जी महाराज

अखिल भारतीय श्रावक संस्कार शिविर के समापन पर शोभायात्रा आज

आगरा. शाबाश इंडिया

मानव हो तो मानव की तरह ही जगत में रहना पड़ेगा मानवीय व्यवहार के साथ ही जीवन में मानवता छलकना चाहिए आपके व्यवसाय व्यवहार वाणी में मानवता के लक्षण परिलक्षित होगे तो स्वता तो सकारात्मक सन्देश जायेगा आज धर्म को लोग साधन बना रहे हैं यही धार्मिक लोगों की भूल है जब व्यक्ति के मन में भाव आ जायें कि धर्म करने से मेरी समस्या हल हो जाती है तो धर्म आपको पारलौकिक आनंद से आप वंचित हो जाएंगे ऐसे धर्म करने वाले लोग संसार में भरे पड़े हैं जो व्यक्ति धर्म से सुख सुविधाएं चाहते हैं वह सब मिलेगा पुण्य के बगेर इस जगत में सुख समृद्धि मिल नहीं सकती जो कुछ भी वैभव आपके पास है ये सब पुण्य के उदय में ही मिल रहा है हमें स्वयं को भोगने को कहा था हम दूसरों को भोग रहे हैं उपादान दृष्टि ब्रह्मचारी व्रत का कारण है। किसान के पास दो बैल है एक उदय है वह दूसरे बैल की घास को भी खा जाता है तो किसान उसके नकेल डालकर इतनी कठोरता से बाधंता है कि अपनी घास तक नहीं खा पाता ऐसे ही ये संसारी प्राणी अपने सुख को छोड़ कर दूसरे को भोगने की चाह रखेगा तो बैल की तरह ही व्यवहार

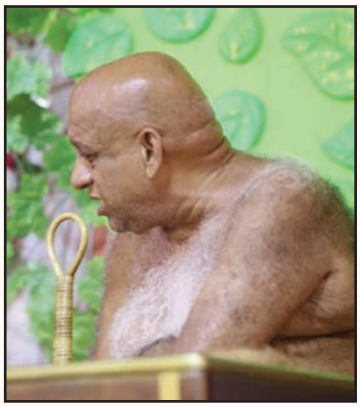

होगा इसलिए यहां दूसरे को भोगने की चाह को अब्रह्म कहा गया है उक्तआश्य के उद्गार मुनिपुंगव श्री सुधा सागर जी महाराज ने अखिल भारतीय श्रावक संस्कार शिविर की विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए हरि पर्वत आगरा में व्यक्त किए।

शिविर में जगत कल्याण के लिए महा शान्ति धारा की

मध्यप्रदेश महासभा संयोजक विजय धुर्रा ने बताया कि दस दिवसीय अखिल भारतीय श्रावक संस्कार शिविर के समापन पर आगरा शहर के प्रमुख मार्गों से जिन वंदना एवं तपस्वीयो की भव्य शोभायात्रा निकाली जाएगी इसके बाद एम डी जैन कालेज हरि पर्वत पर भव्य समापन समारोह में पुण्यार्जक परिवारो सहित शिविर टापरो सम्मान किया जायेगा इसके पहले आज ब्र प्रदीप भइया शुयस विनोद भ इया सुकांत भइया के मंत्रोच्चार के वीच भगवान का अभिषेक किया गया तद उपरान्त जगत कल्याण की कामना के लिए महा शान्ति शिविर निर्देशक हुकम काका कोटा, दिनेश गंगवाल जयपुर, आनंद जैन, सुमति जैन मुम्बई , सुमन दगरा व्यावर, मध्यप्रदेश महासभा संयोजक विजय धुर्रा , राहुल सिंघई, अशोक नगर शिविर पुण्यार्जक निर्मल कुमार वीरेन्द्र कुमार मोढया हीरालाल दिव्य कुमार वैनारा राजेश जैन गया वालों के साथ अन्य भक्तों द्वारा की गई। जिनका सम्मान कमेटी के अध्यक्ष प्रदीप जैन ढठउ नीरज जैन (जिनवाणी)- महामंत्री निर्मल कुमार जैन मोट्या-कोषाध्यश मनोज कुमार बाकलीवाल- मुख्य संयोंजक पी.एल. बैनाडा कार्याध्यक्ष हीरालाल बैनाड़ा - स्वागतध्यक्ष जगदीश प्रसाद जैन - ललित जैन (डायमन्ड)अमित बाबी राजेश जैन गया बाई के जैन श्री विमल मारसंस भोलानाथ सिंघंई जितेन्द्र कुमार जैन शिखर चंद सिघई ने किया

धर्म को अपने भोग विलास में शामिल ना करें

उन्होंने कहा कि धंम्मभोग निमित्तम धर्म को आप अपने भोग विलास में शामिल कर रहे हो भक्तामर से आप भोग विलास चाह रहे हैं सब सांसारिक साधनों को प्राप्त करने के लिए धर्म कर रहे हैं दूसरों को मिटा देने के लिए धर्म कर

रहे हैं मायाचारी के लिए मैं दूसरे को ठगने के लिए पंच इन्द्रीय के विषयों को पाने के लिए भगवान का नाम ले रहा है धर्म कर रहे हैं इससे धर्म का सही फल मिलने वाला नहीं है कितने लोग हैं जो परिग्रह को पाने के लिए अबंह्म कर रहे हैं उनको साधन बना रहे हैं जो इन सब को छोड़ चुके हैं उनसे भी आप भोग विलास और संसारी सुख की चाह रखते हैं आप सीनियर का मार्ग दर्शन लिया जाता है लेकिन आप किसका सहयोग ले रहें जिनने सब कुछ छोड़ दिया है हम एक पुण्यात्मा को पाप में शामिल कर रहे हैं ऐसे जिन देव सब कुछ छोड़ दिया उनसे अपने भोगों की पूर्ति करना चाह रहे हैं। उन्होंने कहा कि संसार में सब लोग कहीं ना कहीं भगवान के पास जायेंगा वहां कोई खाली हाथ नहीं जाता लेकिन कुछ चढ़ा कर वापिस आ जाता है कुछ तो नारियल की कील बस चढ़ाते हैं और पूरी चटक खुद खा लेते हैं जिन दर्शन ही संसार में ऐसा है जहां सब कुछ चढ़ा दिया जाता है एक दाना भी वापिस नहीं लाते भगवान को चढ़ाएं गई वस्तु को हम पूरी समर्पित कर देते हैं ।

वेद ज्ञान

आस्था का आधार

आस्था का आधार ईश्वर में आस्था मनुष्य का सर्वश्रेष्ठ गुण है। अंध विश्वास के कुपरिणाम प्रायः देखने को मिलते हैं। धर्म व अध्यात्म जगत में आरंभ से ही आस्था सबसे अधिक चर्चित शब्द रहा है। यह कहा जा सकता है कि आस्था से ही धर्म की बात आगे बढ़ती है। ईश्वर में आस्था मनुष्य का सर्वश्रेष्ठ गुण है। यह एक तरह से अपने सृजनहार और पालनहार के प्रति आभार की अभिव्यक्ति है। आस्था परमात्मा की सत्ता को स्वीकार और शिरोधार्य करने जैसा है, किंतु भावनाओं के अतिरेक में मनुष्य की ईश्वर और धर्म में आस्था को मापदंडों से बाहर मान लिया जाता है। इससे अंध आस्था का संकट खड़ा नजर आता है। जब कोई तर्क काम न करे, तब उसके परिणाम का आकलन भी कठिन हो जाता है। अंध विश्वास के कुपरिणाम प्रायः देखने को मिलते हैं। इससे एक सहज प्रश्न उभरता है कि क्या यह ईश्वर की राह हो सकती है? सभी धर्मों की समान राय है कि ईश्वर एक परम शक्ति है जिसने इस संसार की रचना की है और वही अपने अनुसार इसे चला रहा है। इतनी विशाल सृष्टि की रचना किसी नियोजन और आधार के बगैर संभव नहीं है। मनुष्य एक साधारण से घर का निर्माण आरंभ करता है तो उसके लिए भी योजना बनाता है अपने और परिवार के भविष्य के लिए भी कुछ निश्चित लक्ष्य तय करता है। उसे बोध है कि किसी निर्धारित योजना को अपनाकर ही उपलब्धियां अर्जित की जा सकती हैं। समाज, व्यवसाय, राज्य आदि सभी एक निश्चित मार्ग को अपनाते हैं। सभी जगह तर्कों और सिद्धांतों का बोलबाला है। फिर धर्म जगत में ऐसी अनिश्चितता क्यों जिससे अंधविश्वास को स्थान और मान्यता मिले। मनुष्य तो सारे नियोजन के बाद भी भूल कर सकता है। वह पक्षपात, धोखा, फरेब, अन्याय, अनाचार कर सकता है, किंतु ईश्वर के बारे में ऐसा सोचा भी नहीं जा सकता। वास्तव में मनुष्य अपनी दुर्बलताओं और दुगुर्णों को अंध विश्वास अथवा तर्क के परे विश्वास का नाम देकर उत्तर देने से बचना चाहता है। ईश्वर में आस्था उसके गुणों में आस्था है। ईश्वर पालक है तो यह विश्वास स्वाभाविक है कि वह सब के हित देखेगा। ईश्वर न्यायकर्ता है तो सभी यह मान लें कि वे न्याय से वंचित नहीं रहेंगे।

संपादकीय

जलवायु परिवर्तन पर काबू पाने के लिए मेहनत...

जलवायु परिवर्तन का सबसे अधिक असर खेती-किसानी पर पड़ रहा है। हर वर्ष सर्दी, गर्मी, बरसात का चक्र असंतुलित और मिजाज कुछ उग्र रूप में दर्ज होता है। इस वर्ष भी बरसात का मौसम अपने सामान्य समय से पखवाड़ा भर बाद समाप्त होगा। यानी बरसात कुछ अधिक दिन तक रहेगी। लौटते वक्त बादल कई इलाकों में बरस कर जाएंगे। जाहिर है, इसका प्रभाव अगली फसल पर पड़ेगा। आमतौर पर इस मौसम में धान पकने शुरू हो जाते हैं। जब तेज बारिश होती और हवा चलती है, तो फसल जमीन पर लोट जाती है। इससे धान की कटाई में मुश्किल आती और पैदावार कम हो जाती है। फिर खेतों में लंबे समय तक नमी बनी रहने से उनकी जुताई और गेहूं की बुआई में देरी होगी। वैसे ही सर्दी का मौसम हर वर्ष कुछ छोटा होता जा रहा है, गेहूं की फसल को उचित ठंड न मिलने के कारण उनमें पर्याप्त दाने नहीं लग पाते। जल्दी गर्मी शुरू हो जाने से फसल जल्दी पक कर तैयार हो जाती है और

गेहूं के दाने छोटे होने लगे हैं। इसकी वजह से उत्पादन पर बुरा असर पड़ रहा है। इस वर्ष भी मानसून के देर से लौटने के चलते धान और गेहूं दोनों फसलों पर बुरा असर पड़ने की आशंका है। यह तेरहवीं बार होगा, जब मानसून अपने तय समय से देर से लौटेगा। दक्षिण-पश्चिमी मानसून का चक्र असंतुलित होने के कारण इस साल भी बहुत सारे इलाके सूखे की चपेट में रहे, तो कई इलाकों में बरसात तबाही लेकर आई। जहां बारिश नहीं हुई, वहां धान की फसल सूख गई और जहां अधिक पानी बरसा, वहां खेत और बाग बड़े पैमाने पर बह गए। बहुत सारे इलाकों में बरसात देर से शुरू हुई, इसलिए धान की रोपाई समय पर नहीं हो पाई और अनुमान है कि करीब सत्रह फीसद कम धान की खेती हो पाई है। तिस पर बरसात के असंतुलित स्वभाव ने उत्पादन पर बुरा प्रभाव डाला है। इस तरह खाद्यान्न जरूरतें पूरा करने को लेकर चिंता गहराने लगी है। भारत दुनिया का बड़ा चावल निर्यातक है, मगर इसी तरह मानसून का चक्र हर साल गड़बड़ होता रहा और बरसात अपने समय पर न होकर विलंब से आती और समाप्त होती रही, तो घरेलू जरूरतें पूरा करना भी कठिन होता जाएगा। पिछले वर्ष गेहूं के निर्यात पर पाबंदी लगानी पड़ी थी, इस वर्ष बासमती चावल के निर्यात को संतुलित करना पड़ा। यही स्थिति दलहनी और तिलहनी फसलों के मामले में भी है। जलवायु परिवर्तन से पैदा संकट पर काबू पाने के लिए दुनिया के तमाम देश हर वर्ष कार्बन उत्सर्जन कम करने का संकल्प लेते हैं। मगर अभी तक वह संकल्प कागजी ही ज्यादा नजर आता है। इसे लेकर संपन्न और अधिक औद्योगिक उत्पादन करने वाले देशों की तरफ से जैसी गंभीर पहल होनी चाहिए, वैसी नहीं दिखती। इसका नतीजा यह हो रहा है कि न केवल बरसात का चक्र और स्वभाव बदला है, बल्कि गर्मी भी हर वर्ष कुछ अधिक तकलीफदेह रूप में आती है। सर्दी की अवधि सिकुड़ रही है। जिन देशों में हर समय सर्दी और बर्फ पड़ा करती थी, उनमें अब लू चलने लगी है। **-राकेश जैन गोदिका**

परिदृश्य

गंभीर होने की जरूरत

मणिपुर में मई महीने से अब तक जारी हिंसा को लेकर सरकार की ओर से उठाए गए कदम उसकी नाकामी ही दशार्ते हैं। ऐसी स्थिति में जमीनी स्तर पर जो समुदाय कमजोर पड़ता है, उसके प्रति अन्याय की स्थितियां मजबूत होती हैं। जबकि सरकार की मुख्य भूमिका कमजोर और उत्पीड़ित तबके की सुरक्षा करने की होनी चाहिए, मगर ऐसा लगता है कि न तो हिंसक गतिविधियों पर पूरी तरह रोक लगाने में कामयाबी मिल पा रही है और न ही न्याय सुनिश्चित करने के हालात बनाए जा रहे हैं। हालत यह है कि अदालतों तक पहुंचे मामलों पर सुनवाई में भी कई तरह की अड़चनें खड़ी हो रही हैं। हाल ही में आरोप लगे कि मणिपुर में एक विशेष समुदाय के वकीलों को उच्च न्यायालय में पेश होने की इजाजत नहीं दी गई। अगर ये आरोप सही हैं तो यह हिंसक गतिविधियों में लोगों के मारे जाने से लेकर संपत्तियों के नुकसान और लोगों के अपनी जगहों से उजड़ने के समांतर एक ऐसी स्थिति है, जिसमें पीड़ित तबकों के लिए न्याय के रास्ते भी बंद हो जाएंगे। इसी के मद्देनजर सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को हिंसा प्रभावित मणिपुर में बार एसोसिएशन के सदस्यों से यह सुनिश्चित करने को कहा कि राज्य में किसी भी वकील को अदालती कार्यवाही तक पहुंचने से न रोका जाए। अगर किसी को रोका गया तो यह अदालत के आदेश की अवमानना होगी। शीर्ष न्यायालय ने कहा कि यह अदालत लोगों के लिए है और मामले की सुनवाई करना उपचारात्मक प्रक्रिया का हिस्सा है। अदालत ने मणिपुर सरकार को भी यह सुनिश्चित करने को कहा कि राज्य के सभी नौ न्यायिक जिलों में वीडियो कान्फ्रेंसिंग की सुविधाएं स्थापित की जाएं, ताकि कोई वकील या वादी डिजिटल माध्यम से हाई कोर्ट के समक्ष उपस्थित होने का इच्छुक हो, तो वह न्यायालय को संबोधित कर सके। हालांकि मणिपुर सरकार की ओर से कहा गया कि अदालत में पेश होने से किसी को नहीं रोका जा रहा है लेकिन अगर ऐसे आरोप सामने आए हैं और उनका कहीं भी कोई आधार है तो निश्चित रूप से यह न्याय की अवधारणा को बाधित करेगा। शायद यही वजह है कि सुप्रीम कोर्ट ने अगली बार अपने समक्ष नमूना आदेश का संकलन भी पेश करने को कहा, जिससे पता चल सके कि सभी समुदायों के वकील उच्च न्यायालय में पेश हुए। विडंबना है कि मणिपुर में मैतेई और कुकी समुदायों के बीच हिंसा की शुरूआत के अब पांच महीने होने को आए, लेकिन इससे जुड़ी बुनियादी समस्या पर विचार या बातचीत की गुंजाइश निकालने की तो दूर, अब तक हिंसा की घटनाओं को भी नहीं रोका जा सका है। अब भी वहां से अक्सर ऐसी खबरें आ रही हैं, जिनमें किसी खास समुदाय के लोगों को चिह्नित करके उनके इलाकों पर हमला किया जाता है। राज्य स्तरीय सुरक्षा तंत्र और सेना की तैनाती के बावजूद इतने लंबे वक्त से जारी हिंसा और उसके बाद अब अदालती प्रक्रिया में न्याय की मांग तक पीड़ितों की पहुंच बाधित किए जाने की खबरें यह बताने के लिए काफी हैं कि मणिपुर सरकार शिद्दत से काम नहीं कर रही है। दूसरी ओर, इस मसले पर शांति समिति और निगरानी समिति के गठन के बावजूद अब तक कोई सकारात्मक नतीजा सामने नहीं आ सका है। इस बात की तत्काल जरूरत है कि हिंसा रोकने के साथ-साथ पीड़ित तबके को न्याय दिलाने को लेकर सरकार गंभीर हो।

अपने कर्मो से डरो ईश्वर से नहीं,भगवान तो माफ कर देगा,पर कर्म माफ नहीं करते है : महासती धर्मप्रभा

सुनिल चपलोत. शाबाश इंडिया

चैन्नई।कर्मो से डरो ईश्वर से नहीं,ईश्वर तो माफ कर देता है परन्तु कर्म माफ नहीं करतें है।गुरवार साहूकारपेट जैन भवन के मरूधर केसरी दरबार मे महासती धर्मप्रभा ने श्रावक श्राविकाओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि कर्मो के कारण ही हमारी आत्मा संसार मे अनादि काल से भटक और अटक रही है।संसार में सुख- दुःख कर्मों के फल अनुसार ही मिलते हैं। पुण्य कर्मों का फल सुख के रूप में हमें मिलता है। पाप कर्मों का फल दुःख के रूप में मिलता है। इन कर्मों के फल से आज तक कोई भी प्राणीं नहीं बच पाया है। कर्मों के फल की सजा भगवान महावीर स्वामी को भी भोगनी पड़ी थी।यदि हमारे कर्म अच्छे हैं तो यह जीवन सुधर सकता है वरना यह आत्मा संसार फिर से अटक भटक सकती है।संसार मे मानव भव ही एक ऐसा भव जिससे हम आत्मा को संसार से छुटकारा दिला सकते है। पुण्य और शुभ कर्मों के आधार पर ही हमे मानव भव मिला है और हम तुच्छ वस्तुओं को प्राप्त करने के लिए हम इस मानवभव को बिगाड़ रहे है। जीवन में सुख-दुःख कर्मो के कारण ही हमे भोगने पड़ते है। कर्म हमारे अच्छे है तो हमें सांप भी डंस लेता फिर भी हम.मरने से बच जाऐगे और कर्म हमारे बुरे है तो शक्कर भी जहर बन जाती हैं। जिस प्रकार हम चाहकर भी अपनी परछांई को अपने से अलग नहीं कर सकते, ठीक उसी प्रकार हमारे द्वारा किए गए कर्म भी हमारा पीछा नहीं छोड़ने वाले नहीं है। भोगने पर ही छुट सकतें है। साध्वी स्नेह प्रभा ने उत्तराध्ययन सूत्र का वांचन करते हुए कहा कि संसार के प्रत्येक प्राणी को अपने कर्मों का फल भोगना ही पड़ता है। इससे मुक्ति कभी नहीं मिलती है। इंसान कितने ही छिपकर कर्म करता है,लेकिन परमात्मा की नजरों से कर्म छिपने वाले नहीं है।कर्म ही सृष्टि का आधार है।मनुष्य जो भी कर्म करता है, चाहे सकारात्मक हो या नकारात्मक,उस कर्म का फल तो उसे भोगने ही पड़ेगे, भोगे बिना संसार से आत्मा को मोक्ष नहीं मिलने वाला है। श्री एस.एस. जैन संघ साहूकार पेट के कार्याध्यक्ष महावीर चन्द सिसोदिया ने बताया धर्मसभा मे चैन्नई महानगर के उपनगरों के अलावा राजस्थान महाराष्ट्र से पधारे अतिथियों का श्रीसंघ के शांतिलाल दरड़ा,शम्भूसिंह कावड़िया,सुभाष काकलिया,जंवरीलाल कटारिया, ज्ञान चन्द दुग्गड़,राजेश चौरड़िया आदि ने सभी मेहमानों का स्वागत किया।

मान्यावास,मानसरोवर जैन मंदिर में नेमीकुमार और राजुल के विवाह के नाटक का हुआ भव्य मंचन

जयपुर. शाबाश इंडिया। श्री शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर इंजीनियर्स कॉलोनी मान्यवास मानसरोवर जयपुर में द' 27 सितंबर को भाद्रपद शुक्ला त्रयोदशी को दशलक्षण महापर्व पर उत्तम अन्किचन्य धर्म के दिन की शुरूआत शांति धारा के साथ हुई। शांतिधारा के पुण्यांजक कमल चंद , तारा देवी छाबड़ा सपरिवार और ज्ञानचंद, हीरामणी झांझरी परिवार रहो तत्पश्चात बड़ी ही भक्ति भाव से दस लक्षण मंडल विधान की पूजा की गई। शाम को सांस्कृतिक कार्यक्रम के दीप प्रज्वलन के पुण्यार्जक महावीर, मीना, मयंक, ग्रीष्मा, युवान जैन परिवार था। उसके पश्चात महिला मंडल द्वारा श्री नेमीकुमार और राजुल के विवाह में मूक पशुओं की पुकार सुन नेमीकुमार और राजुल के वैराग्य और दीक्षा पर आधारित ''राग से वैराग्य की ओर'' नाटक का मंचन किया गया। मंगला चरण कशवी जैन ने किया। राजुल और नेमी कुमार का अभिनय निशा छाबड़ा और ग्रीष्मा जैन के द्वारा किया गया। नेमी कुमार की भव्य बारात बैंड बाजों के साथ सभी रीती रिवाज के साथ निकाली गई। मीना, इंद्राणी, भूमिका, दैविक, नीलम , रेणु ,रजनी ,ऋतु, गुंजन , शेफाली , प्रियंका, सपना नाटिका के मुख्य पात्र रहे। तरुणाज जैन के द्वारा नाटिका का मंच संचालन किया गया। तत्पश्चात महावीर ,मीना के द्वारा सभी पात्रों को पुरस्कार वितरण कर सम्मानित किया गया।

भावपूर्ण श्रद्धांजलि

हमारी आदरणीया

श्रीमती सुशीला कासलीवाल

धर्मपत्नि श्री सुरेश कासलीवाल

के आकस्मिक निधन पर हम सभी

सादर श्रद्धांजलि

अर्पित करते हैं।

: श्रद्धावनत :

दर्शन – विनिता बाकलीवाल (बस्सी वाले)

शैलेन्द्र –प्रियंका गोधा (समाचार जगत) ,

मोहित –नम्रता राणा,

विनोद (मोनू) –रविना छाबड़ा ,

वासना से वात्सल्य की और गमन ही "उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म": आचार्य सौरभ सागर

जयपुर. शाबाश इंडिया

शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर सेक्टर 8 प्रताप नगर में बुधवार को दशलक्षण महापर्व के अंतिम दिन ''उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म'' एवं अनंत चतुर्दशी पर्व हर्षोल्लास के साथ आचार्य सौरभ सागर महाराज के सानिध्य में मनाया गया। साथ ही 12 वें तीर्थंकर भगवान वासुपूज्य स्वामी के मोक्ष कल्याणक पर्व के अवसर पर मंत्रोच्चार के साथ निर्वाण लड्डू चढ़ाया गया। इससे पूर्व मूलनायक शांतिनाथ भगवान के स्वर्ण एवं रजत कलशों से कलशाभिषेक किये गए, जिसमें समाज के 500 से अधिक श्रद्धालु सम्मिलित हुए और भगवान का कलशाभिषेक किया एवं सौभाग्यशाली पुण्यार्जक परिवार के द्वारा आचार्य सौरभ सागर के मुखार्विन्द भव्य वृहद शांतिधारा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अखिल भारतीय दिगंबर जैन युवा एकता संघ अध्यक्ष अभिषेक जैन बिट्टू ने बताया कि श्रद्धालुओं ने श्रद्धा - भक्ति और अष्ट द्रव्यों के थाल के साथ दसलक्षण पर्व, उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म, अनंत चतुर्दशी और भगवान वासुपूज्य का जल, चंदन, अक्षत, पुष्प, नेवेघ, दीप, धूप, फल, अर्घ और महाअर्घ के साथ पूजन आराधना कर जिनेन्द्र प्रभु की भक्ति की। रखा निर्जल उपवास, गुरुवार को त्यागी - व्रतियों का होगा सामूहिक पारणाः दसलक्षण पर्व के अंतिम दिवस अनंत चौदस पर्व का जैन धर्म में बहुत बड़ा महत्व है, इस अवसर श्रद्धालु सुबह से लेकर शाम तक जिनेन्द्र प्रभु का पूजन करते है और पूरे दिनभर का निर्जल उपवास रखते है। शुक्रवार को आचार्य श्री के सानिध्य में दसलक्षण पर्व के दस उपवास, पांच दिन के पंचमेरू उपवास, तीन दिन के झर का तेला, रत्नत्र का तेला इत्यादि उपवास रखने वाले त्यागी - व्रतियों का सामूहिक पारणा करवाया जायेगा, इससे पूर्व वषायोग समिति, समाज समितियों, संस्थानों द्वारा सभी का सम्मान किया जायेगा। पूजन के दौरान उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म पर अपने उपदेश में आचार्य सौरभ सागर महाराज ने कहा की भोगो को इतना भोगा कि खुद को ही भेग बना डाला, साध्य और साधना का अंतर मैने आज मिटा डाला। काम और भोग से ग्रसित आत्मा हमेशा पतन को प्राप्त होती है और अपने से दूर होती है क्योकि अनादिकाल संस्कारो से युक्त आत्मा प्रयत्नशील न होकर मैथुन संज्ञा के ही अधीन हो जाती है। कामी व्यक्ति उस कुत्ते समान है जो हड्डी को चबाकर रस का अनुभव करता है। वासना काम उस ₹ किंपाल फल के समान है जो खाने में मधुर देखने में सुन्दर और सूँघने में सुरक्षित होती है किन्तु उसका परिणाम है - मृत्यु ही है। मोक्ष महल का अंतिम सोपान - ब्रह्मचर्य है। आत्मा में रमण करना, उसी में जीना यही ब्रह्मचर्य है, जिस प्रकार कमल पैदा तो कीचड़ में होता है किन्तु वह जाता कीचड़ से दूर मुक्त आकाश में है उसी प्रकार प्राणी काम से पैदा होता है यह उसकी मजबूरी है किन्तु काम में ही जीना और मरना मजबूरी नहीं है। अतः व्यक्ति को काम में नहीं राम में जीने का अभ्यास करना चाहिए, यही भाव एक दिन आत्मा स्वभाव को प्राप्त करवाने में सार्थक होंगे।

दशलक्षण करने वाले वृतियों का प्रशस्ति पत्र देकर सम्मान किया

जयपुर. शाबाश इंडिया। जैन समाज के दस लक्षण पर्व के दौरान जिन समाज जन ने अपने संयम के द्वारा जो आत्म कल्याण से जनकल्याण की भावना, जियो और जीने दो कि कामना एवं लोक शांति की भावना की जाती है, इसकी प्रशंसा करने की भावना से महावीर इंटरनेशनल युवा द्वारा दसलक्षण वृत करने वाले विनय झांझरी एवम गरिमा पाटौदी का प्रशस्ति पत्र देकर, साफा बंधन एवम माल्यार्पण कर स्वागत किया गया। युवा केंद्र सचिव विकास पाटनी ने बताया की स्वागत कार्यक्रम में युवा केंद्र अध्यक्ष आनंद सेठी, विशाल राखी पाटौदी, पारस नेहा पहाड़िया, विशाल सोनम काला, गौरव रुचि गंगवाल, प्रवीण सुमन पहाड़िया, राहुल आशीष ऋषभ उपकार झांझरी, विकास पाटौदी, सुमित गंगवाल, शुभम नीरज काला, प्रियांशु, अमित आकाश पहाड़िया, ओम कोठरी, मनीष लढ़ा, उपस्थित रहे। वृति परिवार से माताजी विमला देवी झांझरी, अलका झांझरी, रविकांत पाटौदी, पवन पाटौदी ने संस्था की सामाजिक गतिविधि भरी भूरी प्रशंसा करी।

जैन मिलन के तत्वावधान में धार्मिक हाऊजी आयोजित

मनीष विधार्थी. शाबाश इंडिया

बड़ामलहरा । परम पूज्य आचार्य श्री विराग सागर जी महाराज की परम शिष्या आ. श्री विबोध श्री माताजी की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से दसलक्षण महापर्व के अवसर पर हाउजी तम्वोला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में आलोक जैन तहसीलदार , पंचायती मंदिर कमेटी के अध्यक्ष महेश डेवडिया, पंचायती मंदिर मंत्री राजेंद्र जैन लल्लू मंडी मंचासीन रहे एवं निर्णायक मंडल मंचासीन रहा। कार्यक्रम में सर्वप्रथम आचार्य श्री विराग सागर जी महाराज का चित्रानावरण एवं दीप प्रज्वलन मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथियों द्वारा किया गया जैन मिलन के समस्त पदाधिकारी एवं सदस्यों द्वारा महावीर वंदना के बाद कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। प्रतियोगिता में 50 प्रतियोगियों ने भाग लिया ।

आराध्य धाम जिनालय में, दसलक्षण पर्व की धूम रही

फरीदाबाद. शाबाश इंडिया। सेक्टर 88 में जन जन के आकर्षण के केंद्र आराध्य धाम जिनालय में दसलक्षण पर्व पूज्य आचार्य अरुण सागर जी के निर्देशन में सआंनद मनाये जा रहे हैं । सुबह 6:15 से रात्रि 9:30 तक धार्मिक गतिविधियों के केंद्र बने इस जिनालय में प्रतिदिन ज्ञान वर्धन हेतु ज्ञान प्रश्नोत्तरी हो रही है। प्रतिदिन संध्या आरती, प्रतिक्रमण के बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न होते हैं। आज रंगोली व उदबोधन प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। श्रीमती रिया जैन द्वारा सम्पन्न रंगोली प्रतियोगिता में सुन्दर रंगोलियों में प्रथम स्थान कुमारी तनिष्का दूसरा स्थान श्रीमती अंकिता, तीसरा स्थान श्रीमती दामिनी को मिला। उदबोधन प्रतियोगिता में प्रथम अमित, दिवतीय श्रीमती पूजा व श्रीमती सुरभि को तृतीय स्थान मिला। छोटे बच्चों की उदबोधन प्रतियोगिता में भी बच्चों ने उत्साह से भाग लिया । उदबोधन के बिषय थे 'युवा पीढ़ी अपनी श्रेष्ठ विरासत से कैसे जुड़े, व बच्चों को मनोरंजन हेतु मोबाइल से पार्क कैसे भेजें। प्रतिदिन गुरुवर द्वारा दस लक्षण धर्म के विभिन्न स्वरूपों के बिषय में उदबोधन दिया जाता है, जो लोगो को श्रेष्ठ श्रावक बनने को प्रेरित कर रहा है। प्रतिदिन शांतिधारा के पश्चात विधान सम्पन्न हो रहा हैं। श्रीमती विभा जैन ने दस उपवास की साधना की है। उनका व अन्य तपस्वीयो का सम्मान आराध्य धाम, जैन इंजिनिर्स सोसाइटी, वर्धमान महावीर सोसाइटी द्वारा किया जायेगा । छोटे-छोटे बच्चों की धार्मिक कार्यों में सहभागिता सभी को आनंद दायी लग रही है। 30 सितम्बर को प्रभुजी की पालकी यात्रा, सभी जिनबिम्बो का अभिषेक, सामूहिक क्षमावाणी व प्रतिभोज का आयोजन होगा।

शक्ति नगर जैन मंदिर में महिला जागृति संघ द्वारा "सच्ची भक्ति की जीत" नाटक का हुआ मंचन

जयपुर. शाबाश इंडिया। महिला जागृति संघ द्वारा शशी जैन द्वारा लिखित ''सच्ची भक्ति की जीत'' नाटक का मंचन शक्ति नगर दिगम्बर जैन पोरवाल चन्द प्रभु के मन्दिर प्रांगण में हुआ। राजेंद्र शर्मा द्वारा निर्देशित नाटक का मंच संचालन सरोज जैन (बेला) ने किया तथा गायक कलाकार सरोज छाबड़ा ,कुसुम ठोलिया, साधना काला ने अपनी मधुर आवाज में बखूबी साथ दिया । नाटक के मुख्य कलाकार निर्मला वैद , राजकुमारी , निर्मला गंगवाल, ज्योति छाबड़ा शारदा सोनी , सुनिला ,विजिया, दीपिका रेखा , बाल कलाकार प्रार्थना ,काशवी, सिद्धि , रति थे ।सबने अपनी भूमिका बहुत अच्छी निभाई ।

चलो दिल से कुछ गुफ्तगू कर लें...

चलो दिल से कुछ गुफ्तगू करलें...

सेहत से नाता क्या, जुस्तुजू कर लें...

आज हृदय यानी दिल की बहुआयामी चर्चा का दिन विशेष है...कितनी कहावतें...कितने किस्से इसके इर्द गिर्द छाए रहते हैं। ये धड़के तो जिंदगी गुलजार है और थम जाए तो आगे परमात्मा का द्वार है! बहरहाल बंदा उम्र पूरी कर ईश्वर के दरवाजे दस्तक दे, तो यह सहज जीवन की अपेक्षित गति है...पर बाली उम्र में ही गच्चा दे जाए यानी हार्ट अटैक पड़ जाए और सांसे थम जाएं तो यह अस्वाभाविक है और इसके पीछे कारण भी किस्म किस्म के हैं। खान पान, जीवन जीने का तरीका, जलवायु, वातावरण और सबसे बढ़कर जीवन के प्रति हमारा नजरिया, हमारी संवेदना! तो...ऐसा क्या करें कि हृदय की गति असमय ना थमे, निर्बाध चलती रहे और जीवन सरिता बहती रहे! क्योंकि धड़कनों का अनायास थम जाना जाने वाले के मित्रों, परिजनों पर पीड़ा का जो असर छोड़ता है... वह भी इस दिले नादां के लिए समस्या का सबब है!

सेहत से नाता क्या, जुस्तुजू कर लें...

बकौल शायर...
बहुत शोर सुनते थे, पहलू में दिल का...
जो चीरा तो कतरा ए खून निकला !
कहने को कतरा ए खून है यह दिल, यह हृदय...या हार्ट!
पर, जमाने को सिर पर उठाए हैं
जनाब! क्या नाता है दिल और मन का...

ब्लड सप्लाई का पम्पिंग स्टेशन

दिल यानी लहू का कतरा...कह सकते हैं हृदय शरीर को रक्त सप्लाई करने वाला मात्र पम्पिंग स्टेशन है! भाव यानी मन का दिल से कोई लेना देना नहीं... इसका कोई जैविक अस्तित्व नहीं। यह मस्तिष्क का सीईओ है, जो सोचता है और उसके अनुसार कार्य करवाता है। सेहत का सारा खेल सोच यानी नजरिए से जुड़ा है। सोच सकारात्मक तो सेहत भी अच्छी... सोच नकारात्मक तो सेहत की, हृदय की हानि! गुस्सा सेहत का बैरी...रक्त प्रवाह को बढ़ाने वाला यानी उस पर कार्य भार बढ़ाने वाला, जो आगे चलकर हृदय के लिए घातक हो सकता है। वर्ल्ड हार्ट डे एक वैश्विक अभियान है, जिसकी मदद से लोगों को यह बताया जाता है कि हार्ट संबंधी बीमारियों से कैसे बचा जा सकता है। हर साल इस दिन को एक स्पेशल थीम के साथ सेलिब्रेट किया जाता है। सदियों से लोग अपने दिलों को सोच, भावनाओं और प्यार और गुस्से जैसी भावनाओं से

जोड़ते आए हैं। हृदय हमारे शरीर का एक ऐसा अंग है जो हमारी सोच प्रक्रियाओं और भावनाओं में होने वाले परिवर्तनों पर लगभग तुरंत प्रतिक्रिया करता है। याद रखें, जब आप चिंतित या भयभीत महसूस करते हैं तो दिल की धड़कनें और तेज धड़कनें होती हैं या जब कोई प्यार में होता है तो दिल का दौड़ना और मीठा-मीठा दर्द होता है। तो संक्षेप में, यह कहना गलत नहीं होगा कि हमारा दिल हमारे मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण से निकटता से जुड़ा हुआ है। तनाव, चिंता और अवसाद अगर लंबे समय तक अनियंत्रित और अनुपचारित रहें तो हृदय स्वास्थ्य पर असर डाल सकते हैं। जिंदगी का स्वागत मुस्कुरा कर कीजिए! सात्विक भोजन को प्राथमिकता दीजिए!भरपूर नींद, भरपूर मशक्कत के संग खुशमिजाजी अपना लीजिए! माना...दौर मुश्किलों से भरा है! पर सबर कर दिल और जरा ठहर... जब खुशी ही न ठहरी...तो गम की क्या औकात है!

साधना सोलंकी 'राजस्थानी'

पंडित टोडरमल जी की उत्तम क्षमा

हीरा चन्द बैद

पंडित टोडरमल जी जयपुर ही नहीं अपितु सकल भारत के जैनियों में बहुत ही सम्माननीय विद्वान हैं। गुलाबी नगरी जयपुर के जौहरी बाजार में घी वालों के रास्ते में दिगम्बर जैन तेरापन्थ मन्दिर है जो देशभर में बड़े मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध हैं। पंडित टोडरमल जी ने इसी मन्दिर में सर्वमान्य ग्रंथ मोक्षमार्ग प्रकाशक की रचना की। तीन सौ वर्षों बाद आज भी मोक्षमार्ग प्रकाशक अध्यात्म जगत में सर्वाधिक लोकप्रिय एवं प्रचलित ग्रंथ हैं जिसकी अंग्रेजी भाषा सहित अनेक भाषाओं में लाखों की संख्या में प्रतियां छपकर जन-जन तक पहुंच चुकी है और इसका श्रेय जाता है गुरु देव कानजी स्वामी व पंडित टोडरमल स्मारक भवन जयपुर को। इस ग्रंथ की लोकप्रियता को बनाये रखने में पंडित टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर की अहम भूमिका रही है। लोकप्रिय व तार्किक विद्वान डा. हुकम चन्द जी भारिल्ल ने तो पंडित टोडरमल जी पर शोध कार्य कर डाक्ट्रेट की उपाधि भी प्राप्त की थी। आचार्यकल्प पंडित टोडरमल जी का जीवन क्षमामय था। आज उत्तम क्षमा धर्म दिवस के अवसर पर पंडित जी के जीवन में घटित उत्तम क्षमा का एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत कर रहा हूं: पंडित टोडरमल जी साहब का जयपुर नरेश से बड़ा स्नेह था। महाराज साहब पंडित जी का बड़ा सम्मान करते थे। एक दिन पंडित जी राजा से मिलने के लिए राजदरबार में जा रहे थे। पहरे पर बिल्कुल नया सिपाही था। पहरेदार का ध्यान दूसरी तरफ था इतने में पंडित जी राजभवन के भीतर चले गये। सिपाही ने देखा तो उसे बड़ा क्रोध आया कि बिना पूछे भीतर क्यों चले गये। सिपाही ने पंडित जी के एक चांटा मारते हुए कहा बिना पूछे भीतर कैसे चले गए ? पंडित जी चुपचाप वापस चलें आये।दूसरे दिन सिपाही से पूछकर राजभवन में गये। राजा के पास जाकर पंडित जी ने कहा - महाराज आपका नया सिपाही बड़ा योग्य, ईमानदार और ड्यूटी का सच्चा आदमी है उसे कुछ पारितोषिक देना चाहता हूं। महाराज ने खुश होकर सिपाही को बुलाया। पंडित जी को राजा के पास बैठा देख कर सिपाही कांप उठा। राजा ने कहा पहरेदार! पंडित जी तुझ पर बहुत खुश है और कुछ इनाम देना चाहते हैं। सिपाही ने सोचा! महाराज व्यंग्य कर रहे हैं। वह कुछ बोल नहीं पा रहा था। उसी समय पंडित जी ने उसे थपथपाते हुए इनाम दिया। सिपाही ने पंडित जी के चरणों में गिरकर क्षमा मांगी।
ऐसी थी आचार्यकल्प पंडित टोडरमल जी की उत्तम क्षमा।

हीरा चन्द बैद
एस -21, सरदार भवन, मंगल मार्ग,
बापू नगर, जयपुर।

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर 'शाबाश इंडिया' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादकः राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर
शाबाश इंडिया
shabaasindia@gmail.com
weeklyshabaas@gmail.com

Rotary RID : 3056
GIVE BLOOD SAVE LIFE
रोटरी क्लब जयपुर एवं
यंग इंडियंस जयपुर चैप्टर
के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित
विशाल रक्तदान शिविर
CREATE HOPE in the WORLD
Yi Young Indians
दिनांक : 29 सितम्बर 2023, शुक्रवार समय - सुबह 9:00 बजे से 2:00 बजे तक
स्थान - पूर्णिमा यूनिवर्सिटी कैंपस, रामचंदपुरा, सीतापुरा, जयपुर
(सहयोगी संस्था-जैन सोशयल ग्रुप मिडटाउन जयपुर)
राहुल सिंघी चेयरमैन यंग इंडियंस जयपुर चैप्टर
रोटे. उजास चन्द जैन अध्यक्ष रोटरी क्लब जयपुर
रोटे. नवीन कोठारी निर्देशक रोटरी क्लब जयपुर
रोटे. सुभाष हिम्मतरामका कैंप चेयरमैन रोटरी क्लब जयपुर
रोटे. CA दुर्गेश पुरोहित चेयरमैन रोटरी क्लब जयपुर
रोटे. पीयूष जैन सचिव रोटरी क्लब जयपुर

क्षमावाणी पर्व पर विशेष

क्षमावाणीः मनोमालिन्य धोने का पर्व

भारत की प्राचीन श्रमण संस्कृति की अत्यन्त महत्त्वपूर्ण 'जिन' परम्परा ने क्षमा को पर्व के रूप में प्रचलित किया है। जैनों के प्रमुखतम पर्व में ह्यक्षमापर्वह्न है। इसे क्षमावाणी भी कहते हैं। विश्व के इतिहास में यह पहला पर्व है, जिसमें शुभकामना, बधाई, उपहार न देकर सभी जीवों से अपने द्वारा जाने-अनजाने में किए गए समस्त अपराधों के लिए क्षमायाचना करते हैं। क्षमा करने और क्षमा माँगने के लिए विशाल हृदय की आवश्यकता होती है। तीर्थंकरों ने सम्पूर्ण विश्व में शांति की स्थापना के लिए सूत्र दिया है–

खम्मामि सव्वजीवाणं, सव्वे जीवा खमंतु मे।
मित्ती मे सव्वभूदेसु, वेरं मज्झम ण केणवि।।

अर्थात मैं सभी जीवों को क्षमा करता हूँ। सभी जीव मुझे भी क्षमा करें। मेरी सभी जीवों से मैत्री है। किसी के साथ मेरा कोई वैर भाव नहीं है। क्षमावणी का पर्व सौहार्द, सौजन्यता और सद्भावना का पर्व है। आज के दिन एक दूसरे से क्षमा मांगकर मन की कलुषता को दूर किया जाता है। मानवता जिन गुणों से समृद्ध होती है उनमें क्षमा प्रमुख और महत्वपूर्ण है। कषाय के आवेग में व्यक्ति विचार शून्य हो जाता है। और हिताहित का विवेक खोकर कुछ भी करने को तैयार हो जाता है। लकड़ी में लगने वाली आग जैसे दूसरों को जलाती ही है, पर स्वयं लकड़ी को भी जलाती है। इसी तरह क्रोध कषाय को समझ पर विजय पा लेना ही क्षमा धर्म है। रामधारी सिंह दिनकर ने कहा है कि क्षमा वीरों को ही सुहाती है। उन्होंने लिखा है कि- क्षमा शोभती उस भुजंग को जिसके पास गरल हो, उसका क्या जो दंतहीन, विषहीन, विनीत सरल हो।। क्षमा को सभी धर्मों और संप्रदायों में श्रेष्ठ गुण करार दिया गया है। जैन संप्रदाय में इसके लिए एक विशेष दिन का आयोजन क्षमावाणी के रूप में किया जाता है। मनोविज्ञानी भी क्षमा या माफी को मानव व्यवहार का एक अहम हिस्सा मानते हैं। उनका कहना है कि यह इंसान की जिन्दगी का एक अत्यंत महत्वपूर्ण पहलू है। क्षमावणी पर्व हमारी वैमनस्यता, कलुषता बैर–दुश्मनी एवं आपस की तमाम प्रकार की टकराहटों को समाप्त कर जीवन में प्रेम, स्नेह, वात्सल्य, प्यार, आत्मीयता की धारा को बहाने का नाम है, हम अपनी कषायों को छोड़ें, अपने बैरों की गांठों को खोलें, बुराइयों को समाप्त करें, बदले, प्रतिशोध की भावना को नष्ट करें, नफरत–घृणा, द्वेष बंद करें, आपसी झगड़ों, कलह को छोड़ें।अनुसंधानकताओं ने यह निष्कर्ष निकाला है कि लम्बे समय तक मन में बदले की भावना, ईर्ष्या–जलन और दूसरों के अहित का चिन्तन और प्रयास करने पर मनुष्य भावनात्मक रूप से बीमार रहने लगता है।जीवन में जब भी कोई छोटी-बड़ी परेशानी आती है तब व्यक्ति अपने मूल स्वभाव को छोड़कर पतन के रास्ते पर चल पड़ता है। जो कि सही नहीं है, हर व्यक्ति को अपना आत्मचिंतन करने के पश्चात सत्य रास्ता ही अपनाना चाहिए। हमारी आत्मा का मूल गुण क्षमा है। जिसके जीवन में क्षमा आ जाती है उसका जीवन सार्थक हो जाता है। क्षमायाचना और क्षमादान चाहे दो आत्मीय जनों के बीच हो अथवा समूहों या राष्ट्रों के बीच , यदि ईमानदारी के साथ क्षमायाचना की जाती है , तो यह अपमान की भावना का निराकरण करती है। क्षमा में बहुत बड़ी शक्ति होती है। क्षमाशीलता का भारी महत्व है , पर हम इसके बारे में बहुत कम ध्यान देते हैं। क्षमा का जीवन में बहुत बड़ा महत्व है। अगर इंसान कोई गलती करे और उसके लिए माफी मांग ले तो सामने वाले का गुस्सा काफी हद तक दूर हो जाता है। जिस तरह क्षमा मांगना व्यक्तित्व का एक अच्छा गुण है, उसी तरह किसी को क्षमा कर देना भी इंसान के व्यक्तित्व में चार चांद लगाने का काम करता है। क्षमायाचना करने के लिए हममें अपनी गलती , असफलता और कमजोरी को स्वीकार करने की क्षमता होनी जरूरी है। पर निरंतर जीत के लिए हम इतने आतुर होते हैं कि अपनी गलतियों और कमजोरियों को स्वीकार करने की हमें फुरसत ही नहीं मिलती।

क्षमा ने ही युगों-युगों से मानव-जाति को नष्ट होने से बचाया है

किसी को किसी की भूल के लिए क्षमा करना और आत्मग्लानि से मुक्ति दिलाना एक बहुत बड़ा परोपकार है। क्षमा करने की प्रक्रिया में क्षमा करने वाला क्षमा पाने वाले से कहीं अधिक सुख पाता है।अगर आप किसी की भूल को माफ करते हैं तो उस व्यक्ति की सहायता तो करते ही हैं साथ ही साथ स्वयं की सहायता भी करते हैं। किसी ने ठीक ही लिखा है-

जैसा भी हो सम्बन्ध बनाये रखिये।
दिल मिले या न मिले हाथ मिलाते रहिये।।

-डॉ. सुनील जैन संचयः ज्ञान-कुसुम भवन, नेशनल कान्वेंट स्कूल के पास, 874/1, गांधीनगर, नईबस्ती, ललितपुर 284403 उत्तर प्रदेश
9793821108

भगवान वासुपूज्य निर्वाण महोत्सव पर निर्वाण स्थली मंदारगिरी में निकाली गई भव्य शोभायात्रा

जैन श्रद्धालुओं ने चढ़ाया 51 किलो का निर्वाण लाडू। भगवान वासुपूज्य के जयकारो से गूंज उठा मंदारगिरी सिद्ध क्षेत्र

बौंसी (बाँका). शाबाश इंडिया

जैन धर्म के 12 वें तीर्थंकर भगवान वासुपूज्य स्वामी के निर्वाण महामहोत्सव पर उनके निर्वाण स्थली मंदारगिरी में गुरुवार को जैन धर्मावलम्बियों ने धूमधाम के साथ भव्य शोभायात्रा निकालकर 51 किलो का भव्य निर्वाण लाडू श्रद्धापूर्वक चढ़ाया। रथयात्रा का प्रारम्भ श्री दिगम्बर जैन कार्यालय मंदिर से प्रारंभ होकर हनुमान चौक, बौंसी बाजार, गांधी चौक वापस वासुपूज्य द्वार, पंडा टोला, समोशरण बारामती जैन मंदिर पापहरणी रोड के रास्ते गाजे-बाजे के साथ मंदार पर्वत तलहटी स्थित जैन मंदिर तक गई। रथयात्रा के पहले बौंसी स्थित कार्यालय जैन मंदिर में प्रातः 6 बजे अभिषेक, शांतिधारा व पूजन-अर्चना किया गया।

सुसज्जित रथ पर वासुपूज्य स्वामी को विराजमान कर निकाली गई रथयात्रा

भगवान वासुपूज्य स्वामी के प्रतिमा जी को सजे-धजे भव्य रथ पर प्रातः 7 बजे विराजमान कर गाजे-बाजे के साथ भव्य रथयात्रा मंदार पर्वत के लिए प्रस्थान हुई। रथ पर विराजमान भगवान वासुपूज्य की मनोहारी प्रतिमा चांदी के छत्र तले अलौकिक छटां बिखेर रही थी। जैन श्रद्धालु हर्षोल्लासपूर्वक झूमतेझनाचते, भक्ति-भजन करते महामंत्र णमोकार का जाप करते हुए चल रहे थे। इस दौरान जगह-जगह रथ पर विराजमान भगवान वासुपूज्य की मंगल आरती की गई।

''जियो और जीने दो'' के संदेश का हुआ जयघोष, दिया सत्य, अहिंसा, मैत्री और शांति का संदेश

शोभायात्रा के आगे-आगे जैन पंचरंगा ध्वज, झंडा-पताका लिए श्रद्धालु जैन संदेश देते चल रहे थे। गाजे-बाजे, घंटी के मधुर धुन पर श्रद्धालु नृत्य करते रथयात्रा की शोभा बढ़ा रहे थे। इस महोत्सव को लेकर जैन समाज के बीच खासा उत्साह था। ज्ञात हो कि मंदारगिरी जैन धर्म के 12वें तीर्थंकर भगवान वासुपूज्य स्वामी का तप, कैवल्य ज्ञान व पावन मोक्ष स्थली है। इस भव्य शोभायात्रा व निर्वाण महोत्सव में देश के कोने-कोने से सैंकड़ो की संख्या में जैन श्रद्धालु मंदारगिरी पहुंचे।

दिगंबर जैन समाज के आराधना का पर्व दस लक्षण पर्व संपन्न, भव्य शोभायात्रा निकाली

सौरभ जैन. शाबाश इंडिया

पिड़ावा। सकल दिगंबर जैन समाज का 10 दिवसीय दस लक्षण पर्व शोभायात्रा के साथ संपन्न हुआ। 19 सितंबर मंगलवार से प्रारंभ हुए दस लक्षण पर्व अनंत चतुर्दशी तक श्रावक श्राविकाओं ने अभिषेक, शान्ति धारा, नित्य नियम पूजन, दस लक्षण की पूजन,मां जिनवाणी की पूजन, तत्त्वार्थसूत्र का वाचन , प्रतिक्रमण, सामायिक, आरती करते हुए अपनी आत्मा का कल्याण करते हुवे बड़े ही हर्ष और उल्लास के साथ मनाया गया। जैन समाज प्रवक्ता मुकेश जैन चेलावत ने बताया कि पिड़ावा, कोटड़ी, भक्तामर विश्व धाम ड़ोला के सभी जिनालयों में 10 दिनों तक नयापुरा के लाल मंदिर में दीदी इन्दौर द्वारा, आदिनाथ जिनालय एवं पंचबाल यति मंदिर स्वाध्याय भवन में पंडित शुभम शास्त्री भोपाल द्वारा, श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन जुना मंदिर में 108 सुव्रत सागर महाराज व बाल ब्रह्मचारी संजय भैया पठारी के सानिध्य में, श्री सांवलिया पार्श्वनाथ दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र बड़ा मंदिर में प्रतिष्ठाचार्य अन्नु भैय्या शास्त्री जबलपुर के कुशल नेतृत्व में अभिषेक, शांति धारा, पूजन, शास्त्र स्वाध्याय,व सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। अनंत चतुर्दशी के महापर्व पर श्री सांवलिया पार्श्वनाथ दिगंबर जैन बड़ा मंदिर में अन्नू भैया शास्त्री जबलपुर द्वारा विश्व शांति के लिए 21000 हजार अभिमंत्रों से एक साथ 9 जिन बिम्बो की पांडूशीला पर विराजमान कर महा शांतिधारा की गई व वासुपूज्य भगवान के निर्वाण लाडू चढ़ाये गये उसके बाद चौबीस तीर्थंकर भगवान की पूजन की गई। पूजन के पश्चात दोपहर 3 बजे बड़े मंदिर से शोभायात्रा प्रारंभ हुई। जो की पिपली चौक, शहर मोहल्ला, सेठान मोहल्ला, खण्डपुरा, नयापुरा लाल जैन मंदिर होते हुए वापस सभी मंदिरों में अभिषेक के बाद शोभायात्रा बड़े मंदिर पहुंची। जहां पर भगवान पार्श्वनाथ स्वामी पर अभिषेक किया गया। शोभायात्रा में सभी श्रावक, श्राविकाये, बच्चे नंगे पैर चल रहे थे। सभी पुरुष वर्ग सफेद वस्त्र एवं महिलाएं केसरिया साड़ी एवं लड़कियां मर्यादित ड्रेस में चल रही थी। सभी युवा वर्ग भजन मंडली के साथ भगवान का गुणगान भक्ति करते हुवे चल रहे थे। रात्रि में भगवान की मंगलमय आरती के बाद प्रवचन व ब्रह्मानंद सागर पाठशाला के अध्यापक आशीष, निक्कू ,रानी दीदी, सोनू राजस्थानी द्वारा एक मिनट प्रतियोगिता का कार्यक्रम करवाया गया । क्षमावाणी का पर्व 30 सितंबर शनिवार को रत्नत्रय के जुलूस के बाद बड़े मंदिर से मनाया जाएगा अन्त में भूपेंद्र सिंह जैन ने भैय्या अन्नु शास्त्री जबलपुर का सम्मान करते हुवे आभार व्यक्त किया गया।

दस लक्षण महापर्व के समापन पर निकली शोभायात्रा

रुठियाई. शाबाश इंडिया

नगर में विगत 10 दिनों से चल रहे दस लक्षण महापर्व का समापन भव्यता से हुआ। जैन मिलन अध्यक्ष अमित जैन सेंकी ने बताया अनंत चतुर्दशी के जुलूस के साथ दस लक्षण महापर्व संपन्न हो गया। जलूस नरोनी स्थित श्री आदिनाथ दिगंबर जैन मंदिर जी से प्रारंभ नगर के प्रमुख मार्गो से होता हुआ वापिस मंदिर जी में जाकर समापन हो गया। जहां पर श्रीजी के अभिषेक किए गए। अभिषेक के लिए पात्रों का चयन बोलियों के माध्यम से किया गया। इस अवसर पर जैन समाज के पुरुष महिला बच्चे उपस्थित रहे।

नेमीसागर कालोनी स्थित जैन मंदिर में वासपूज्य भगवान का निर्वाणोत्सव मनाया

जयपुर. शाबाश इंडिया

नेमीसागर कालोनी स्थित जैन मंदिर में दसलक्षण महापर्व के अंतिम दिन आज उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म की पूजन की गई। साथ ही तीर्थंकर भगवान वासापूज्य के निवाणोत्सव पर लडडू भी चढ़ाया गया इस अवसर पर विधानाचार्य पंडित रमेश शास्त्री ने श्रावको को जीवन में ब्रह्मचर्य का महत्व बतलाया। अध्यक्ष जे के जैन कालाडेरा ने बताया कि सांयकाल मे वार्षिक कालशाभिषेक माल की बोली मंजू सेठी एवं परिवार द्वारा ली गई। पूजन स्थापना जे के जैन कालाडेरा द्वारा की गई। दसलक्षण महोत्सव के समापन पर सुनीता पहाड़िया द्वारा झण्डा गीत गायन किया गया।सायंकाल आरती, दीप प्रज्वलन व संगीतमय भक्तामर अड़तालीस दीपकों के पुनर्जक मंजू सेठी व परिवार द्वारा किया गया। कार्यक्रम में जैन समाज के धर्मचंद पहाड़िया ज्ञान झांझरी जीतो के संदीप जैन विकास जैन व गणमान्य व्यक्ति तथा काफी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

जैन मंदिर पारस विहार, मुहाना मंडी में उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म की एवं 24 भगवान पुजा हुई

जयपुर. शाबाश इंडिया

चिंतामणी पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर, मोहनपुरा, मुहाना मंडी, जयपुर में दशलक्षण महापर्व में गुरुवार दिनांक 28 सितंबर अनंत चतुर्दशी उत्तम ब्रह्मचर्य के दिन प्रातः 7.00 बजे मुल नायक 300 वर्ष प्राचीन श्री 1008 पार्श्वनाथ भगवान जी की , आदिनाथ भगवान जी की , महावीर भगवान जी की प्रतिमा पर अभिषेक, शान्ति धारा करने का सोभाग्य प्रतीक गोदीका, नरेश अजमेरा,विकास सोगाणी,अश्विनी कुमार जैन, जवाहर नगर वालों को मिला। मदिर समिति अध्यक्ष पवन कुमार गोदीका ने बताया कि सकल जैन समाज के साधर्मी बन्धु संतोष -शोभा बगड़ा, धमेंद्र -मीना गोदीका, श्रीमती सरोज गोदीका, सुभाष -सुनिला पाटनी, नरेश - सुमन अजमेरा, रमेश , तपन -नीतु बिनायक्या, सुजानगढ़ वाले, विकास सोगाणी, श्रेयांस पाटनी, सुमति बड़जात्या,अभिषेक छाबड़ा, रतन - मिनाक्षी , योगेन्द्र -संगीता बड़जात्या, मनोज बाकलीवाल, नवीन-लक्ष्मी काला, विरेश-सुनिता लुहाड़िया,, पुनीत -ममता सोगाणी, अभिषेक शाह, हिमांशु पाटनी, अशोक - दीपिका, मुकेश -वन्दना पांडया, सुनील - आशा बड़जात्या, अजय - मोनिका पहाड़िया, अनिल- आशा गोदीका,लोकेन्द्र- नील जैन, अभय - बेला बड़जात्या, विजय -अभिलाषा ठोलिया, हुकम चंद - सुनिता देवी कासलीवाल, संजय - कुसुम लता,हिमांशु पाटनी, अजय - मोनिका पहाड़िया, अमित - रजनी लुहाड़िया, मुकेश - मधु पाटनी, आदि सभी श्रद्धालुओं भक्ति भाव से दसलक्षण महामण्डल विधान पर उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म के तत्पश्चात 1.15 बजे 24 भगवानो की विधान मंडल पर पुजा की। सायंकाल पार्श्वनाथ भगवान के कलशाभिषेक में आस-पास की कालोनी वाले साधर्मी बन्धुओ ने कलश देखकर एवं सामुहिक आरती कर पुण्यार्जन का संचय किया, आज की भगवान जी की माल पहनने का सोभाग्य झर का तेला करने वाले विकास सोगाणी को मिला।

सहस्रकूट विज्ञातीर्थ में भगवान वासुपूज्य का निर्वाण महोत्सव बड़े हर्षोल्लास से मनाया गया : गुरु माँ विज्ञाश्री माताजी

गुंशी, निवाई. शाबाश इंडिया। श्री दिगम्बर जैन सहस्त्रकूट विज्ञातीर्थ , गुन्सी में विराजित आर्यिका विज्ञाश्री माताजी के ससंघ सान्निध्य में दशलक्षण महापर्व बड़े ही हर्षोल्लास के साथ समाप्त हुआ । श्री दशलक्षण विधान रचाने का सौभाग्य मुन्नालाल गौरझामर , टीकमचंद विवेक विहार जयपुर , कमलचंद नरेणा , पारस श्याम नगर जयपुर , राजेश निवाई , कैलाश त्रिवेणी नगर जयपुर , दिनेश बनेठा वाले निवाई , पदमचंद निवाई सपरिवार को प्राप्त हुआ । आज दसवें दिन 22 अर्घ्य चढ़ाकर दशधर्म की विशेष पूजन की गई । साथ ही 12 वें तीर्थंकर वासुपूज्य भगवान के मोक्षकल्याणक पर्व पर 12 किलो का निर्वाण लाडू चढाया गया । मध्याह्न में कलशाभिषेक का विशेष कार्यक्रम सम्पन्न हुआ । दशलक्षण पर्व में 10 उपवास , 3 उपवास आदि की आराधना करने वाले व्रतियों की विनतियों का कार्यक्रम सानंद सम्पन्न हुआ। पूज्य माताजी ने सभी को उद्बोधन देते हुए कहा कि - कामसेवन का मन से, वचन से तथा शरीर से परित्याग करके अपने आत्मा में रमना ब्रह्मचर्य है। संसार में समस्त वासनाओं में तीव्र और दुर्दश कामवासना है। इसी कारण अन्य इन्द्रियों का दमन करना तो बहुत सरल है किन्तु कामवासना की साधनभूत काम इन्द्रिय को वश में करना बहुत कठिन है। छोटे-छोटे जीव जन्तुओं से लेकर बड़े से बड़े जीव तक में विषयवासना स्वाभाविक (वैभाविक) रूप से पाई गई है। सिद्धांत ग्रन्थों ने भी मैथुन संज्ञा एकेन्द्रिय जीवों में भी प्रतिपादन की है। कामातुर जीव का मन अपने वश में नहीं रहता। उसकी विवेकशक्ति नष्ट-भ्रष्ट हो जाती है। शील तो नारियों का गहना है । इसी शील के बल पर सीता , द्रौपदी , मनोरमा , चंदना आदि सतियों ने बड़े से बड़े संकट को दूर किया है । हमें भी अपने शील की रक्षा करना चाहिए ।

आचार्य सम्राट जयमल जी म. सा. के जन्म दिवस पर त्रिदिवसीय कार्यक्रम संपन्न

अमित गोधा. शाबाश इंडिया

ब्यावर। प. पू. आचार्य सम्राट जयमल जी म. सा. के जन्म दिवस के उपलक्ष मे महासती धैर्यप्रभा जी म. सा. आदि ठाणा 3 की पावन प्रेरणा से 3 दिवसीय कार्यक्रम सम्पन्न हुए। गौशाला मे गौ माता की गुड़ एवं हरे चारे से सेवा की गई इस अवसर पर संघ के कोषाध्यक्ष सुरेश भंडारी सहित प्रसन्न संचेती, मनीष मकाणा नवयुवक मंडल के अध्यक्ष राजेश कोठरी, अनिल श्रीश्रीमाल महिला मंडल की श्रीमति मधु मकाणा आदि मौजूद रहें। अंत मे संघ मंत्री दुलीचंद मकाणा ने पधारे हुए सभी सदस्यों का आभार व्यक्त किया।

भगवान वासुपुज्य के निर्वाण पर लड्डू चढ़ाकर मनाई अनंत चतुर्दशी

जयपुर. शाबाश इंडिया।

वरूण पथ, मानसरोवर स्थित श्री दिगंबर जैन मंदिर में अनंत चतुर्दशी के पावन अवसर पर प्रातः अभिषेक व विश्व शांति के लिए शांति धारा मूलनायक भगवान महावीर पर सचिन, सौरभ ठोलिया ने की, साथ में भगवान वासुपुज्य के मोक्ष कल्याण पर निर्वाण लाडू समाज की ओर से चढ़ाया गया। इस अवसर पर 24 भगवान की पूजाएं की गई। अध्यक्ष एमपी जैन व मंत्री जेके जैन ने बताया विद्यासागर आगम पाठशाला के बच्चों द्वारा शैलवाला पाटनी के निर्देशन व विकास काला के भजनों के साथ संगीतमय पूजा कर महाअर्ध समर्पण किया। प्रवक्ता सुनील जैन गंगवाल ने बताया अपराह्न(दोपहर बाद) 24 भगवान की प्रतिमा पर विशेष अभिषेक हुए।

भगवान वासुपूज्य के गाजेबाजे के साथ चढ़ाया निर्वाण लड्डू

दशलक्षण धर्म के उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म की पूजा संगीत के साथ की गई। कल्पद्रुम महामण्डल विधान विश्व शांति के साथ हुआ समापन

विमल जोला. शाबाश इंडिया

निवाई। सकल दिगम्बर जैन समाज के तत्वावधान में जैन मुनि शुद्ध सागर महाराज एवं क्षुल्लक श्री अकम्प सागर महाराज के सानिध्य में दस लक्षण पर्व के तहत गाजेबाजे के साथ भगवान वासुपूज्य का निर्वाण महोत्सव धूमधाम से मनाया जिसमें श्रद्धालुओं ने बड़चढ़कर भाग लिया। चातुर्मास कमेटी के प्रवक्ता विमल जौंला ने बताया कि गुरुवार को सुबह कल्पद्रुम महामण्डल विधान के समापन समारोह के उपलक्ष्य में विश्व शांति महायज्ञ आयोजित किया गया जिसमें विधानाचार्य पण्डित सुरेश कुमार शास्त्री की अगुवाई में देव शास्त्र गुरु, नव देवता पूजा, सरस्वती मां पूजा, सुपार्श्वनाथ भगवान पूजा, शांतिनाथ भगवान पूजा, सम्मेदशिखर पूजा, के साथ रत्नत्रय की पूजा अर्चना की गई। जौंला ने बताया कि दशलक्षण धर्म के अन्तर्गत श्रद्धालुओं ने उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म की विशेष पूजा अर्चना संगीत के साथ की गई जिसमें सभी इन्द्र इन्द्राणियो ने भक्ति नृत्य की प्रस्तुतियां दी। इस दौरान जैन धर्म के बारवें तीर्थंकर भगवान वासुपूज्य का निर्वाण महोत्सव मनाया गया जिसमें ज्ञानचंद जैन सोगानी ने निर्वाण लड्डू चडाया। इस अवसर पर क्षुल्लक श्री अकम्प सागर महाराज ने कहा कि जिस प्रकार नारियल पर से रेशे उतारकर नारियल गोला बन जाता है उसी प्रकार रेशे उतारना मोहनी कर्म दूर करने का प्रतीक है। और फिर उस पर से कांचली हटाना चारो कषायों को दूर करने का प्रतीक है। फिर गोले के उपर से लाल परत हटाना राग द्वेष हटाने का प्रतीक हैं। फिर वह गोला बाहर से सफेद अंदर से खाली होता है। क्षुल्लक श्री अकम्प सागर महाराज शांतिनाथ भवन में श्रद्धालुओं को सम्बोधित कर रहे थे उन्होंने 10 दिन तक उपवास कर रहे श्रावक पुनीत संधी, हितेश छाबड़ा, को भरपूर आशीर्वाद प्रदान किया। उसी प्रकार यह संसारी आत्मा तप और त्याग के द्वारा तप कर बाहर से शुद्ध हो जाती हैं। और अंदर से भी खाली हो जाती हैं। तब वह आत्मा मोक्ष निर्वाण को प्राप्त करती हैं। हम भी अपने जीवन में पुरुषार्थ कर संयम धारण कर बाहर मे तपे और अंदर से खाली हो तो भगवान बन सकते है यही मोक्ष का स्वरूप है।

पक्षी चिकित्सालय का एजुकेशन और ट्रेनिंग कार्यक्रम

ज्यपुर. शाबाश इंडिया। राजस्थान जनमंच ट्रस्ट की ओर से वेटरनरी विद्यार्थियों, वॉलिंटियर्स और एनिमल वेलफेयर एक्टिविस्ट के लिए एजुकेशन एंड ट्रेनिंग वर्कशॉप का चैम्बर भवन में आयोजन किया गया । ट्रेनिंग कार्यशाला का आयोजन पक्षी चिकित्सालय के संस्थापक कमल लोचन के माध्यम से हुआ ।विधि विशेषज्ञ देवेंद्र मोहन माथुर ने जीव कल्याण से संबंधित कानून की जानकारियां डॉ. तपेश माथुर ने दवाइयां के उपयोग तथा डॉ. सुधीर भार्गव ने उपचार के साथ-साथ नैतिकता संबंधी जानकारियां प्रदान की ।कमल लोचन ने बताया कि इस बहु उपयोगी कार्यशाला के उपरांत प्रशिक्षण सभी को प्रमाण पत्र प्रदान किए गए उन्होंने बताया की पशु पक्षी और पर्यावरण संरक्षण के लिए आवश्यक जानकारियां बहुत अधिक आवश्यक होती है। बीएमएस वेटरनरी कॉलेज के प्राचार्य डॉ आरपी सिंह ने इस अवसर पर विद्यार्थियों को मोटिवेट किया।

मिथ्यात्व ही सबसे बड़ा पाप : डॉ. महावीर शास्त्री

उदयपुर. शाबाश इंडिया। श्री शांतिनाथ दिगंबर जैन मंदिर नेमीनाथ जैन कॉलोनी में इस वर्ष दश लक्षण महापर्व के शुभ अवसर पर पंडित डॉक्टर महावीर प्रसाद जैन शास्त्री टोकर द्वारा कुंदकुंद शतक पर प्रवचन करते हुए कहा कि मिथ्यात्व ही सबसे बडा पाप है। जिसके कारण जीव संसार में अनादि काल से भरक रहा है। आप द्वारा विगत दस दिनों से अपनी पहिचान कैसे करे इस पर प्रवचन कुंदकुद शतक के आधार पर चल रहे हैं। .पंडित अर्पित जी शास्त्री भगवा द्वारा सुबह - शाम रत्नकरण्ड श्रावकाचार व दशलक्षण पर प्रवचन तथा तत्वार्थ सूत्र पर कक्षा व पंडित मादेश शास्त्री जयपुर द्वारा बच्चों की कक्षा ली जा रही है। । प्रतिदिन प्रातः सामूहिक प्रक्षाल ,पूजन हुए । रात्रि में प्रवचन के पश्चात .सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजनअखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन द्वारा किया गया ।इसके अतिरिक्तजिनवाणी सजाओ प्रतियोगिता ,ड्राइंग प्रतियोगिता ,कुंदकुंद शतक पर कंठ पाठ प्रतियोगिता रखी गई । प्रतिदिन 200-250 लोग हर कार्यक्रम में भाग लेते रहे । अंतिम दिन कलश .भरना , क्षमावाणी कार्यक्रम . विद्त सम्मान समारोह पुरस्कार वितरण का कार्यक्रम हुआ । रविवार 1 अक्टूम्बर को पालकी निकाली जायेगी व वात्सल्य भोज रखा गया । यह जानकारी युवा फेडरेशन के अध्यक्ष निर्मल अखावत ने दी ।

अन्नत चतुर्दशी पर कलशाभिषेक के साथ दशलक्षण महापर्व का समापन

बामनवास. शाबाश इंडिया

अनंत चतुर्दशी का महत्व जितना हिन्दू धर्म में है उतना ही अल्पसंख्यक वर्ग के जैन समुदाय में भी है। जैन धर्म में अनंत चतुर्दशी के दिन निर्जल उपवास रखा जाता है।अनंत चतुर्दशी के दिन जैन धर्म के अनुयायी सफेद लाडू यानी कि सफेद लड्डू बनाते हैं और उन्हीं को तीर्थंकरों को चढ़ाया जाता है। यूं तो जैन धर्म में सभी तीर्थंकरों की पूजा की जाती है लेकिन विशेष रूप से भगवान अनंतनाथ की पूजा करना शुभ और फलदायी होता है।इसके अलावा जैन समाज के दशलक्षण पर्व का भी समापन हो रहा है। इस दिन को जैन धर्म के दिगम्बर अनुयायियों के आदर्श अवस्था में अपनाए जाने वाले गुणों को दशलक्षण धर्म कहा जाता है। भाद्रपद माह में दशलक्षण पर्व के तहत गुरुवार को अनंत चतुर्दशी पर बामनवास ब्लॉक के सभी जैन मंदिरों में कलशाभिषेक किए गए। इस दौरान जयकारों से जिनालय गूंज उठे। जैन समाज की ओर से अनंत चतुर्दशी श्रद्धापूर्वक मनाया गया। सभी मंदिरों में विशेष पूजा-अर्चना की गई। विधान मंडल रखे गए। पुरुषों ने सफेद एवं महिलाओं ने पीले वस्त्र पहने। इस अवसर अनंत चतुर्दशी पर तीर्थंकर वासुपूज्य भगवान का मोक्ष कल्याणक महोत्सव भी मनाया गया है। इस अवसर पर दिगम्बर जैन मन्दिर पिपलाई के प्रवक्ता बृजेन्द्र कुमार जैन ने बताया कि दिगम्बर जैन मन्दिर पिपलाई में अनन्त चतुर्दशी पर सुबह से ही सभी जैनालयों में पूजा अर्चना का दौर जारी रहा। चौबीस भगवान का मण्डल माण्डकर विशेष पूजा अर्चना करते हुए और विभिन्न अर्घ चढ़ाए गए शाम को बमनवास तहसील में स्थित सभी दिगम्बर जैन मंदिरों में श्रीजी के कलशाभिषेक का कार्यक्रम हुआ। भगवान जिनेन्द्र की माला की खुली बोली लगाई गई। समाज के कई लोगों ने व्रत एवं उपवास भी रखा। इस अवसर पर रमेश चन्द जैन,विनोद जैन,सुनील जैन,मुकेश जैन,जिनेन्द्र जैन आशु जैन,सुमनलता जैन,राजुल जैन,रजनी जैन,आशा जैन एकता जैन, सपना जैन,अभिनन्दन जैन आदि कई श्रावक -श्राविकाएं उपस्थित थे।

आज क्षमा दिवस- विश्व शांति का एक मात्र परमाणु अस्त्र

क्षमावाणी पर्व को वैश्विक स्तर पर विश्व क्षमा दिवस के रूप में मनाने की नितांत आवश्यकता

जैन धर्म एक अनादि - अनंत - शाश्वत धर्म है। सभी धर्मो का चरम उद्देश्य स्व कल्याण, मानव कल्याण के साथ जीव मात्र का कल्याण है। जैन धर्म में अहिंसा, अनेकान्तवाद, अपरिग्रह एवं क्षमा अपनाने पर जोर दिया गया है। पूरी तरह कर्म सिद्धांत पर आधारित वैज्ञानिक धर्म है ।मनुष्य स्वयं अपना कर्त्ता है, ईश्वर की सत्ता को स्वीकार नहीं करता है ।जैन धर्मावलंबियों द्वारा प्रतिक्रमण के द्वारा सभी जीवों से प्रतिदिन क्षमा मांगी जाती है। जैन धर्मावलंबियों द्वारा भाद्र पद माह में पर्यूषण पर्व - दशलक्षण धर्म - उत्तम क्षमा , उत्तम मार्दव, उत्तम आर्जव, उत्तम शौच, उत्तम सत्य, उत्तम संयम, उत्तम तप, उत्तम त्याग, उत्तम आकिंचन एवम् उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म बड़ी श्रृद्धा एवम् भक्ति पूर्वक मनाये जाते है। जैन दर्शन में पर्यूषण या दशलक्षण पर्व के दिनों में आध्यात्मिक तत्वों की हम आराधना करके अपना और अपने जीवन मूल्यों का स्पर्श करते हैं।इसके समापन के एक दिन बाद अश्विन कृष्णा एकम के दिन बड़े स्तर पर सौहार्दपूर्ण वातावरण में एक विशेष पर्व मनाया जाता है और वह है क्षमावाणी पर्व। इस महापर्व के समापन दिवस को ह्न क्षमा दिवसस्र के रुप में मनाया जाता है। इस दिन संपूर्ण प्राणी जगत को जैन धर्मावलंबी सुख शांति का संदेश देते है। जानने और समझने की बात है कि इस दिन सभी लोग बिना हिचकिचाहट सहज एवं सरल भाव से एक दूसरे से अपनी जानी अनजानी गलतियों के लिए क्षमा मांगते है। सचमुच, मे एक आत्मिक सुधार का अलौकिक त्यौहार है, ''क्षमा दिवस'' , जिसमें मन, वचन और कर्म के संगम से क्षमा मांगी जाती है। इस तरह दशलक्षण धर्म उत्तमक्षमा धर्म से आरंभ होकर क्षमावाणी पर्व मनाने के साथ समापन होता है ।मात्र क्षमा भाव होने से सभी दशलक्षण धर्म स्वतः आत्मसात होने लगते है ।उत्तमक्षमा धर्म के दिन स्वाध्याय करते है, समझने की कोशिश करते है, स्वयं को सरलता, परम पवित्रता, वीतरगता की ओर ले जाते है एवम क्षमावाणी दिवस के अवसर पर मन की मलीनता दूर करते हुए क्षमा भाव कार्यान्वित करते है। दुनिया में यह अपने तरह का अलग पर्व है, जिसमें अंतस मन से क्षमा मांगी जाती और क्षमा की भी जाती है। इस दिन प्रत्येक जीव से अपने जाने या अनजाने में किए गए अपराधों के प्रति क्षमायाचना की जाती है। बधाइयों के पर्व बहुत होते हैं, जिनमें शुभकामनाएं दी जाती हैं, लेकिन जीवन में एक ऐसा दिन भी आना चाहिए, जब हम अपनी आत्मा के बोझ को कुछ हल्का कर सकें। अपनी भूलों का प्रायश्चित करना तथा आगे कोई भूल नहीं करने की प्रतिज्ञा करना, यह हमारे आत्मविकास में सहयोगी होता है। पर्वो के इतिहास में यह पर्व एक अनूठा उदाहरण है । क्षमा याचना दिवस सचमुच में एक आत्मिक सुधार का अलौकिक त्यौहार है, जिसमें मन, वचन और कर्म के संगम से क्षमा मांगी जाती है। क्रोधादि कशाघातों से मानव क्रूर-कर्कश दानव तक बन जाता है, क्षमा व्रत का पालन करने से मानव देवता बन सकता है। शूरवीर की शक्ति का मापदंड ही क्षमा भावना होती है ।क्षमा शस्त्रम करिष्यती दुर्जनः। अत्रणे पतितो वहीः स्वय मेव प्रशाम्यति ।। जिसके पास क्षमा का सामर्थ्य तथा बल है, उसका दुष्ट, दुर्जन कुछ भी नही बिगाड़ सकते । तृण रहित स्थान पर गिरी हुई अग्नि स्वतः ही बुझ जाती है। संसार में सुख और शांति का मूल क्षमा है। हम अपने जीवन में कितने ही बुरे कर्म जान-बूझकर करते हैं और कितने ही हमसे अनजाने में हो जाते हैं। हमारे कृत्यों की वजह से दूसरों का मन आहत हो जाता है। क्षमावाणी पर्व हमे वर्ष में कम से कम एक बार इस पर विचार करने का अवसर देता है कि हमने कितनों को आहत किया है, ठेस पहुंचाई है । चली आ रही दुश्मनी, बैर-भाव की गांठ को बांधकर आखिर हम कहां जाएंगे? जब हम किसी से क्षमा मांगते हैं तो दरअसल अपने ऊपर ही उपकार करते हैं। अच्छाई की ओर प्रवृत्त होने की भावना जब हर मानव के चित्त में समा जाएगी, तब मानव जीवन की तस्वीर ही कुछ और होगी। क्षमा वीरों का आभूषण है, कायरों का नहीं। कायर तो प्रतिकार करता है। प्रतिकार करना आम बात है, लेकिन क्षमा करना सबसे हिम्मत वाली बात है। क्रोध एक दुर्बलता है । मानव-जीवन में वह सहज है, किन्तु तभी तो उसे विजित करने की आवश्यकता है झ मानव-जीवन का लक्ष्य ही है झ कमजोरी, दुर्बलता को विजित करना तथा मानसिक तथा आत्मिक शक्तियों का विकास करना । कभी कभी क्षमा न करना भी क्षमा की श्रेणी में आता है । सामने वाले व्यक्ति की मनः स्थिति देखकर यथानुरूप मनोवैज्ञानिक व्यवहार किया जाता है, जो अंततः उसके हित में होता है। क्षमा भाव अंतस का भाव है । जो अंतस की शुद्धि के आकांक्षी हैं, वे सभी इस पर्व को मना सकते हैं। इस शाश्वत आत्मिक पर्व को जैन परंपरा ने जीवित रखा हुआ है। क्षमा तो हमारे देश की संस्कृति का पारंपरिक गुण हैं। यहां तो दुश्मनों तक को क्षमा कर दिया जाता है। हमारी संस्कृति कहती है - मित्ती में सव्व भूयेसु, वैर मज्झं ण केणवि। -निरंतर

संकलन
भागचंद जैन मित्रपुरा
अध्यक्ष, अखिल भारतीय जैन बैंकर्स फोरम, जयपुर ।

जैन धर्म के 12वें तीर्थंकर वासु पूज्य भगवान का मनाया मोक्ष कल्याणक

अनन्त चतुर्दशी पर चौबीस तीर्थंकरों की कि आराधना। दृष्टि की पवित्रता का नाम ही उत्तम ब्रहचर्य धर्म है:आर्यिका सुबोधमति माताजी

फागी. शाबाश इंडिया

कस्बे सहित परिक्षेत्र के चकवाड़ा, चौरु, नारेड़ा, मंडावरी,मेहंदवास, निमेडा एवं लदाना सहित फागी कस्बे के आदिनाथ मंदिर, बीचला मंदिर, मुनिसुव्रतनाथ मंदिर ,त्रिमूर्ति जैन मंदिर , पार्श्वनाथ मंदिर,चंद्रप्रभु नसिया तथा चंद्रपुरी मंदिर सहित सभी जिनालयों में दस लक्षण महापर्व के दसवें दिन उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म की पूजा अर्चना की गई साथ ही जैन धर्म के 12 वें तीर्थंकर वासु पूज्य भगवान का मोक्ष कल्याणक महोत्सव जोर सोर से मनाया ,जैन महासभा के प्रतिनिधि राजाबाबू गोधा ने अवगत कराया कि इससे पूर्व प्रातः सभी जिनालियों मेंअभिषेक , शांतिधारा बाद अष्टद्रव्यों से पूजा करने के बाद चौबीस तीर्थंकरों की पूजा अर्चना की गई, तथा जैन के 12 वें तीर्थंकर वासु पूज्य भगवान का मोक्ष कल्याणक महोत्सव मनाया गया जिसमें जयकारों के साथ सामूहिक रूप से मोक्ष का प्रतीक निर्वाण लाडू चढ़ाकर सुख,शांति, समृद्धि और खुशहाली की कामना की गयी,इसी कड़ी में गोधा ने अवगत कराया कि आज दसलक्षण महापर्व का हर्षोल्लास से समापन हुआ साथ ही कस्बे में चल रहे दस दिवसीय सहस्त्रनाम जिन शासन विधान का भी समापन हुआ जिसमें भक्ति भाव से 100 अर्घ्य चढ़ाये गये उक्त विधान का रामस्वरुप, कमलेश कुमार ,सुरेश कुमार जैन मंडावरा वालों ने बोली के माध्यम से पुण्यार्जन प्राप्त किया, कार्यक्रम में आज उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म पर आर्यिका सुबोधमति माताजी ने प्रकाश डालते हुए श्रृदालुओं को बताया कि दृष्टि की पवित्रता का नाम ही उत्तम ब्रहचर्य है।

पराई स्त्री को मां,बहन और बेटी के रूप में देखना चाहिए , तथा अपनी आत्मा में रमण करना ही उत्तम ब्रहचर्य धर्म है ओर बताया कि ब्रह्मचर्य अर्थात भ्रम स्वरुप आत्मा में चर्या करना,लीन होना उसका आस्वादन करना वास्तविक उत्तम ब्रहमचर्य धर्म है, कार्यक्रम में चातुर्मास समिति के अध्यक्ष अनिल कठमाना ने अवगत कराया कि आज पूरे दिन भर जैन बन्धु पूजा -अर्चना, धर्म -ध्यान, त्याग -तपस्या, में लीन रहे, तथा समाज के सभी व्यापारिक प्रतिष्ठान बंद रहे।

समाज के सोहनलाल झंडा ने बताया कि श्रृदालुओं ने तीन दिवसीय तेला एवं रत्नत्रय व्रत रखकर भक्ति आराधना की व निराहार रहकर उपवास कर धर्म लाभ प्राप्त किया, समाज के अध्यक्ष महावीर झंडा, एवं महावीर अजमेरा, तथा कमलेश चौधरी ने सामूहिक रूप से बताया कि परिक्षेत्र के सभी जिनालयों सहित कस्बे के जिनालयों में सांयकाल दशलक्षण समापन के कलशाभिषेक हुए, तत्पश्चात माल की बोली लगाई गई तथा महाआरती की गई ।

गुणगान सामायिक और जाप करके मनाया गया श्रमणसंघ के महामंत्री सौभाग्य मुनि का पुण्य स्मृति दिवस अहिंसा भवन

श्रमणसंघ को उच्च शिखर तक पहुंचाया था सौभाग्य मुनि महाराज नेः महासती प्रितीसुधा

सुनिल चपलोत. शाबाश इंडिया

भीलवाड़ा। सम्पूर्ण मेवाड़ गुरू सौभाग्य के उपकारो भूला नहीं सकता है। गुरूवार अहिंसा भवन मे श्रमणसंघ के महामंत्री सौभाग्य मुनि महाराज के पुण्य स्मृति दिवस पर महासती प्रिती सुधा ने धर्मसभा मे गुणागान करतें हुए कहा कि भौतिक रूप से सौभाग्य जी मुनि महाराज कि देह हमारे बीच नहीं है पर.श्रमणसंघ एवं सम्पूर्ण जैन समाज उनके योगदान को भूला नहीं सकता है।सौभाग्य मुनि ने श्रमणसंघ को उच्च शिखर तक पहुंचाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका को निभाते हुए गुरू अम्बेश के बताये गये अहिंसा के मार्ग को अपनाकर समाज को संघठन एकता के सूत्र में जो बांधा उन उपकारों को मेवाड़ भूल नहीं सकता है। आपकी आपकी साधना और विद्वत्ता को देखकर आचार्य आनन्द ऋषिजी एवं सभी संतो ने आपको श्रमण संघ के महामंत्री पद प्रदान किया गया था। सौभाग्य मुनि ने समाज फैली कही कुरितियों मिटाया और धर्म अलख जगाई । मानवता के मसीहा करूणा के देवता थे आपने अनेंक शास्त्रों का शोध के साथ संस्कार जागरण चिकित्सा परमार्थ संघ संगठन की दिशा में महाविधालय साधना सदन संस्थान आदि स्थापित किए जो आज भी गतिमान रूपसे सम्पूर्ण देश अलग प्रांतों चल रहें है।साध्वी उमराव कंवर ने कहा कि सच्चे साधक संत रत्न थें सौभाग्य मुनि जी।

अनंत चतुर्दशी के उपलक्ष्य में भगवान महावीर स्वामी का किया पंचामृत अभिषेक

चंद्रेश कुमार जैन. शाबाश इंडिया

श्रीमहावीरजी। श्री दिगंबर जैन मुख्य मंदिर में गुरुवार को सुबह से ही दस लक्षण महापर्व की अनंत चतुर्दशी को कस्बे के सभी जैन मंदिरों में पूजा आराधना का कार्यक्रम देर शाम तक अनवरत चलता रहा। मंदिर कमेटी के मैनेजर प्रवीण कुमार जैन,पंडित मुकेश शास्त्री ने बताया कि दोपहर को मुख्य मंदिर में दिगंबर जैन पंचायती श्री महावीर जी जैन समाज द्वारा 24 मंडल विधान कराया गया। शाम चार बजे मुनी चिन्मयानंद सागर जी महाराज के सानिध्य में मंत्रोच्चार के साथ मुख्य मंदिर स्थित भगवान महावीर स्वामी की भक्ति संगीत मंडल द्वारा पूजा की गई, तत्पश्चात 5 बजे मुख्य मंदिर से नदी तट बगीचे तक भव्य विशाल जुलूस निकाला गया, जहां से जैन समाज की सैकड़ों महिलाओं द्वारा मंगल कलश लेकर मुख्य मंदिर आई जहां पर मंदिर के पश्चिमी पांडाल में श्रीजी की प्रतिमा का पंचामृत अभिषेक एवं पूजा अर्चना धूमधाम से की गई। सायः 7:30 बजे मान स्तंभ परिसर में भव्य 1008 दीपको से महाआरती की गई। इस अवसर पर मंदिर कमेटी के कर्मचारी, स्थानीय जैन समाज के पदाधिकारी, दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप, चंदनवाला महिला मंडल एवं जैन समाज के गणमान्य लोगों सहित बाहर से आए हुए सैकड़ों की संख्या में जैन धमार्लंबी श्रद्धालु उपस्थित रहे।

अनंत चतुर्दशी पर भक्तिभाव से हुआ दस दिवसीय दसलक्षण पर्व का समापन

दीवान जी की नसियां में अनंत चतुर्दशी पर कलशाभिषेक

शुक्रवार को होगा सभी व्रतियों का पारणा

तीर्थंकर भगवान वासुपुज्य क मोक्ष कल्याणक पर किया निर्वाण लाडू समर्पित

वी के पाटोदी. शाबाश इंडिया

सीकर। पर्वाधिराज दसलक्षण महापर्व का भक्तिभाव से समापन अनंत चतुर्दशी के दिन हुआ । अंतिम दिन उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म की पूजा समस्त जैन मंदिरों में की गई एवं अनंत चतुर्दशी के कलशाभिषेक हुए । भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी के दिन भगवान वासुपुज्य के मोक्ष कल्याणक के अवसर पर प्रातः जैन मंदिरों में जिनेन्द्र प्रभु के अभिषेक व शांतिधारा पश्चात निर्वाण लाडू समर्पित किया गया। प्रवक्ता विवेक पाटोदी ने बताया कि इस पावन अवसर पर शहर के सेठी कॉलोनी जैन मंदिर में श्री जी की भव्य रथ यात्रा निकाली गई , इसके पश्चात अनंत चतुर्दशी के कलशाभिषेक हुए । सांयकाल बजाज रोड स्थित नया मंदिर, जाट बाजार स्थित दीवान जी की नसियां , बावड़ी गेट स्थित बड़ा मंदिर में ब्रह्मचारिणी सरिता दीदी व बबीता दीदी के सानिध्य में अनंत चतुर्दशी के कलशाभिषेक हुए । बड़ा मंदिर में अनंत चतुर्दशी पर वृहद शांतिधारा एवं आरती का सौभाग्य माणकचंद नवरतन हितेश कुमार छाबड़ा परिवार बीड़ वालो को प्राप्त हुआ। ब्रह्मचारिणी सरिता दीदी ने बताया कि आत्मा ही ब्रह्म है और उस ब्रह्म रूपी आत्मा में चर्या करना ही ब्रह्मचर्य है। स्वयं की खोज करना उत्तम ब्रह्मचर्य है। स्वः साधना में रहना आत्म चिन्तन करना और आत्मा में रमण करना ही उत्तम ब्रह्मचर्य है। मन की वासना को रोकना और विचारों से विरक्त होना भी उत्तम ब्रह्मचर्य है। देवीपुरा मंदिर कमेटी अध्यक्ष पदम पिराका व मंत्री पंकज दुधवा ने बताया कि प्रातः शांतिधारा का सौभाग्य महावीर प्रसाद नरेंद्र कुमार निलेश कुमार छाबड़ा परिवार दुधवा वाले व निर्वाण लाडू का सौभाग्य सुशील कुमार प्रदीप कुमार दिलीप कुमार अनिल कुमार सुनील कुमार छाबड़ा परिवार सेसम वाले को प्राप्त हुआ । प्रवक्ता विवेक पाटोदी ने बताया कि शुक्रवार को दसलक्षण व्रतियों का पारणा प्रातः उनके निवास पर होगा । इसके पश्चात मंदिर जी से व्रतियों की शोभायात्रा निकाली जाएगी । दसलक्षण महापर्व पर चार व्रतियों ने दसलक्षण के 10 दिन उपवास किए है । सभी व्रतियों का पारणा शुक्रवार को प्रातः होगा । बजाज रोड़ स्थित दंग की नसियां क्षेत्र निवासी मनोज बाकलीवाल ने अपनी धर्मपत्नी अलका बाकलीवाल के साथ दसलक्षण के उपवास किए है । जाट बाजार दीवान जी की नसियां क्षेत्र निवासी रमेश सुमन बड़जात्या की सुपुत्री तनीषा बड़जात्या ने व बजाज रोड़ स्थित नया मंदिर क्षेत्र स्थित वृन्दावन विहार निवासी सुरेश बड़जात्या ने भी दसलक्षण के 10 कठिन उपवासों को धारण किए है। भव्योंदय अतिशय क्षेत्र रैवासा का वार्षिक मेला की पत्रिका का विमोचन हुआः ब्रह्मचारिणी सरिता दीदी व बबीता दीदी के सानिध्य में सांयकाल दीवान जी की नसियां में रैवासा में 15 अक्टूबर को होने वाले वार्षिक मेले की पत्रिका का विमोचन समाज के वरिष्ठजनो द्वारा किया गया । इस अवसर पर रैवासा मंदिर के समस्त कमेटी सदस्य व समाज के लोग उपस्थित थे ।

नया मंदिर में अनंत चतुर्दशी पर शांतिधारा

अपने मुख से ऐसी कोई बात नहीं बोलें जो सत्य होने पर पछतावा करना पड़ेः ठाकुर

गिरिराजजी को लगाया छप्पन भोग, विशाल पांडाल में गूंज उठे जयकारे

सुनील पाटनी. शाबाश इंडिया

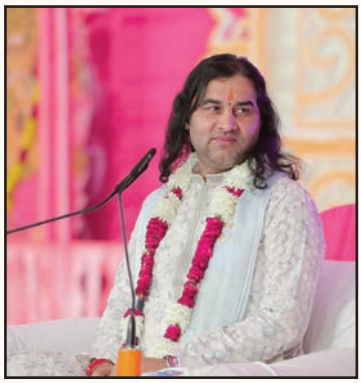

भीलवाड़ा। हम भगवान से प्रेम करते है बड़ी बात नहीं है पर भगवान हम से प्रेम करे तो बड़ी बात है। कभी ऐसी कोई बात अपने मुख से नहीं बोले जिसके सत्य होने पर पछतावा करना पड़े। भगवान को पाने की पहली शर्त है हमारा मन छलरहित निर्मल व निष्कपट होना चाहिए। भगवान से जिनका सम्बन्ध जुड़ गया उनका कल्याण होने में कोई संदेह नहीं होता है। हमे पवित्र व पावन भाव रखते हुए भगवान की नजर में उंचा उठना है। ये विचार परम पूज्य शांतिदूत पं. श्रीदेवकीनंदन ठाकुरजी महाराज ने गुरूवार को शहर के आरसी व्यास कॉलोनी स्थित मोदी ग्राउण्ड में विश्व शांति सेवा समिति के तत्वावधान में सात दिवसीय श्रीमद् भागवत कथा ज्ञान गंगा महोत्सव के पांचवें दिन कथा में भगवान श्रीकृष्ण की बाललीला, गोवर्धनपूजा, छप्पन भोग प्रसंग आदि प्रसंगों का वाचन करने के दौरान कथा में व्यक्त किए। कथा में श्रीमद् भागवत कथा पांडाल शाम को उस समय गिरिराज धरण के जयकारों से गूंज उठा जब भगवान गिरिराज को छप्पन भोग लगाया गया। हनुमान टेकरी महंत बनवारीशरण काठियाबाबा ने भगवान को छप्पन भोग लगाया। गिरिराज भगवान का रूप विट्ठल काष्ट ने धारण किया। छप्पन भोग की सजाई गई झांकी के दर्शन करने के लिए भक्तगण आतुर रहे। छप्पन भोग लगाने के दौरान पांडाल में निरन्तर जयकारे गूंजते रहे और हर तरफ भक्ति से ओतप्रोत माहौल दिखा। कथा श्रवण के लिए शहरवासियों के साथ आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों से भी भक्तों सैलाब मोदी ग्राउण्ड में उमड़ रहा है। कथा के दौरान विभिन्न भजनों पर भी श्रद्धालु भक्ति रस में सराबोर होकर थिरकते रहे। कथा श्रवण कराते हुए पं. श्रीदेवकीनंदन ठाकुरजी महाराज ने कहा कि हमारे अच्छे-बुरे कार्य व कर्म कोई जान न जाने पर ठाकुरजी सब जानते है ओर वह समय आने पर उनका फल भी अवश्य प्रदान करते है। तुम कितना भी प्रयास ओर चालाकी कर लो काल से कोई नहीं बचा सकता। इसलिए ये प्रयास करे कि मौत जब भी आए तो चेहरे पर उदासी न छाए। मौत को भी जो उत्सव बना देता है उसका जीवन सफल व सार्थक हो जाता है। उन्होंने कहा कि भगवान को पाने की राह में हमारे सबसे बड़े शत्रु काम,क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या आदि है। भक्ति के वशीभूत होकर भगवान जिसे पकड़े लेते है उसे छोड़ते नहीं है ओर जिसे छोड़ देते है उसे फिर पकड़ते नहीं है। उन्होंने बालकृष्ण की माखन लीला प्रसंग की चर्चा करते हुए कहा कि जो वस्तु अपनी हो उसे लेना चोरी नहीं कह सकते। आयोजन समिति के सहसचिव बालमुकुंद सोनी ने बताया कि पांचवें दिन हनुमान टेकरी के महंत श्रीबनवारीशरण काठियाबाबा,अपर जिला एवं सेशन न्यायाधीश राजपालसिंह, जिला सेशन न्यायाधीश हरिवल्लभ खत्री, मुख्यमंत्री के विशेषाधिकारी लोकेश शर्मा, ,श्यामसुन्दर सुधीरजी नवनीतजी नौलखा, प्रहलाद अजमेरा, माहेश्वरी सभा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष राघेश्याम सोमानी, सुशील दरक, सत्यनारायण नौलखा, मधुसूदन नौलखा, विनोद नौलखा, रामेश्वरलाल सोडानी, सुरेश आगाल, अभिषेक न्याति, सत्यनारायण सोनी, नीलम नौलखा, अनिता नौलखा, रामकिशन सोनी, नीतू नौलखा, उम्मेदसिंह राठौड़, डॉ. कुलदीप नाथावत, हेमेन्द्रसिंह, नरेन्द्रसिंह, गायक हर्षल चंदवानी, बार एसोसिएशन कार्यकारिणी के उपाध्यक्ष गोपाल सोनी, महासचिव वेदप्रकाश पत्रिया, कोषाध्यक्ष विनय लोमरा, विजय खण्डेलवाल, रामपालजी, लक्ष्मीनारायण काबरा, राजेन्द्र गंदोड़िया, डॉ. अमित तुरकिया, लीलादेवी नौलखा, अल्पना कचोलिया, अंजना शर्मा, भावना पोरवाल, संतोष दरक, शिल्पा काष्ट, सविता खण्डेलवाल, वेदिका सोनी, अनिल बोरदिया, लताजी, संगीता शर्मा, उषा शर्मा आदि ने व्यास पीठ की आरती करके देवकीनंदनजी ठाकुर से आशीर्वाद प्राप्त किया। अतिथियों का स्वागत आयोजन समिति के संयोजक श्यामसुन्दर नौलखा, अध्यक्ष आशीष पोरवाल, वरिष्ठ उपाध्यक्ष एडवोकेट हेमेन्द्र शर्मा, महासचिव एडवोकेट राजेन्द्र कचोलिया, समिति के कोषाध्यक्ष राकेश दरक, सचिव धर्मराज खण्डेलवाल,सह सचिव बालमुकुंद सोनी, संयुक्त सचिव दिलीप काष्ट आदि पदाधिकारियों ने किया। कथा के दौरान राधे-राधे की गूंज के साथ भजनों पर भक्तगण थिरकते रहे।

अनन्त चतुदर्शी की पूजा,विधान ,कलशाभिषेक किये बड़ी धूमधाम से

जयपुर . शाबाश इंडिया। घिनोई वाला जैन मंदिर ,जयलाल मुंशी जी का रास्ता में सभी श्रावको ने बड़े ही भक्ति भाव से प्रातः कलश,शांति धारा,पूजा तथा दिन में विधान ओर सांयकाल कलशाभिषेक किये।

मूल नायक श्री 1008 चन्द्रप्रभ भगवान जी की शांतिधारा

जयपुर। श्री दिगंबर जैन मंदिर चन्द्रप्रभ जी दुगार्पुरा, जयपुर में दशलक्षण महापर्व में दिनांक 28 सितंबर गुरुवार को प्रातः 6.30 बजे मूल नायक श्री 1008 चन्द्रप्रभ भगवान जी के प्रथम अभिषेक शांतिधारा करने का पुण्यार्जन श्रीमती मुन्ना देवी जैन रवि कुमार जैन गोधा परिवार ने प्राप्त किया। दश लक्षण महा मण्डल पूजा के सोधर्म इन्द्र इंद्राणी महेन्द्र कुमार जैन श्रीमती निर्मला जैन सेठी रहे। ट्रस्ट के अध्यक्ष प्रकाश चन्द जैन चांदवाड़ एवं मंत्री राजेन्द्र कुमार जैन काला ने बताया कि उत्तम ब्रम्हचर्य धर्म की विधानाचार्य पंडित दीपक शास्त्री के मंत्रोच्चार एवं संगीतकार पवन बड़जात्या एवं पार्टी की मधुर आवाज में भक्ति भाव से श्रद्धालुओं द्वारा की गई। दोपहर एक बजे से चतुर्विंशति तीर्थंकर मण्डल विधान पूजा का भक्ति भाव से भव्य आयोजन हुआ। तत्पश्चात श्रीजी का अभिषेक एवं श्रीजी की माल हुई। श्रीजी की मालका पुण्यार्जन राकेश कुमार , सुखानंद सारंग , सुजय एवं राजवी जैन काला परिवार चन्दलाई वाले सुंदर विहार दुगार्पुरा को प्राप्त हुआ ।

जनकपुरी में रचा गया इतिहास , 27 परिवार को मिला श्री जी की माल का सोभाग्य

दस लक्षण पर्व के अंतिम दिन भक्ति में डूबा जनकपुरी

प्रातः वासुपूज्य निर्वाण ,दिन में चोबीसी विधान, शाम को प्रतिक्रमण, रात्रि में भक्तामर अर्चना

जयपुर. शाबाश इंडिया

जनकपुरी - ज्योतिनगर जैन मंदिर में दस लक्षण पर्व महोत्सव में गुरुवार को पूरे दिन पूजा विधान भक्ति अर्चना का कार्यक्रम आर्यिका विशेष मति माताजी के सानिध्य में आयोजित हुए । मन्दिर प्रबंध समिति अध्यक्ष पदम जैन बिलाला ने बताया की प्रातः अभिषेक व विशेष शांतिधारा हुई जिसका सोभाग्य अतुल पाटनी मनीष सेठी धन कुमार शास्त्री को मिला । उसके बाद ब्रह्मचर्य धर्म की पूजन तथा विधान का समापन प्रक्रिया विधि पूर्वक हुई ।इसके मध्य वासुपूज्य भगवान के मोक्ष कल्याण पर पूजन व निर्वाण कांड वाचन के बाद निर्वाण लाडू महावीर बिंदायक्या द्वारा समर्पित किया गया । आर्यिका श्री ने सभी को आशीर्वचन दिया ।दोपहर में चोबीस भगवान की पूजन मण्डल विधान पर विधानाचार्य शिखर चंद जैन किरण जैन द्वारा करायी गई जिसमें आदिनाथ से महावीर भगवान तक के चौबीस भगवान की आराधना की गई ।शाम को श्री जी की प्रतिमा को करतल ध्वनि के साथ पांडाल में ले जाकर पाण्डुशीला पर अनन्त चतुर्दशी के कलाशाभिषेक के लिए विधि पूर्वक विराजित किया गया । जहां समाज के जन समूह के समक्ष भक्तों ने अभिषेक किए तथा अभिषेक के बाद परम्परागत श्री जी की माल पहनने का समाज के 27 सोभाग्यशाली परिवारों ने प्राप्त किया जो की एक एतिहासिक अवसर बना और सत्ताईस परिवार को प्रबंध समिति के सदस्यों द्वारा माल पहनाने का तथा उनके द्वारा आरती करने का दृश्य बहुत ही प्रभावक लग रहा था ।कार्यक्रम में महिला मण्डल युवा मंच का व्यवस्था में पूर्ण सहयोग रहा ।इसके बाद अनंत चतुर्दशी के अवसर पर विशेष वार्षिक प्रतिक्रमण हुआ तथा इसके बाद मन्दिर जी में चौदस को नियमित होने वाले भक्तामर पाठ की दीप अर्चना भक्ति भाव के साथ समाज द्वारा किया गया ।

जैन मंदिर त्रिवेणी नगर में अनन्त चतुदर्शी पर सामूहिक मंडल पूजन हुई

जयपुर. शाबाश इंडिया। श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर त्रिवेणी नगर में दशलक्षण महापर्व पर गुरुवार को अनन्त चतुदर्शी एवं उत्तम ब्रहचर्य लक्षण पर्व मनाया गया । समिति के अध्यक्ष महेन्द्र काला ने बताया कि प्रातः भगवान की प्रथम शांतीधारा का सौभाग्य धर्मश्रेष्ठीन महावीर, गौरव, भरत,मयूर, कासलीवाल को मिला ।दोपहर में चौबीस तीर्थंकरों की सामूहिक विधान पूजन अशोक पापड़ीवाल के सान्निधय में हुई व शाम को कलशाभिषेक में माल पहनने का सौभाग्य धर्मश्रेष्ठी डॉ नरेन्द्र विनय पाटनी मैनादेवी परिवार को प्राप्त हुआ ।शाम को महाआरती पश्चात त्यागी वृत्तियों के लिए विनंती का प्रोग्राम हुआ। रात्रि में 48 दीपकों के साथ भक्तामर अनुष्ठान हुआ जिसके पुण्यार्जक अशोक-शिमला पापड़ीवाल थे ।मंदिर जी मे मोना कासलीवाल दस लक्षण के उपवास के अलावा भरत, पूजा, साक्षी, तिलक कासलीवाल, श्रीमती रेनू पाटनी, शुभम बोली वाले, सपना छाबड़ा, गुंजन दही वाले व कथन अनोपड़ा द्वारा जर का तेले के उपवास किए हैं। संकलन : नरेश कासलीवाल

उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म एवं अनंत चतुर्दशी पर्व के रूप में मनाया

आगरा. शाबाश इंडिया। श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर ओल्ड ईदगाह कॉलोनी में गणिनी आर्यिका श्री आर्षमति माता जी ससंघ के मंगल सानिध्य में दशलक्षण महापर्व के अंतिम दसवें दिन 28 सितंबर को उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म एवं अनंत चतुर्दशी पर्व बड़े धूमधाम के साथ मनाया गयो भक्तों ने दसवें दिन का शुभारंभ भगवान पार्श्वनाथ का अभिषेक एवं वृहद शांतिधारा के साथ कियो भक्तों ने पंडित राजेन्द्र जैन शास्त्री के निर्देशन में मंत्रोच्चारण के साथ श्रीजी के समक्ष अर्घ्य अर्पित कर उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म एवं अनंत चतुर्दशी धर्म की पूजन की मांगलिक क्रियाएं संपन्न की इस दौरान भक्तों ने भगवान वासुपूज्य के के निर्वाण कल्याणक के पावन अवसर पर निर्वाण कांड का वाचन कर भगवान वासुपूज्य के समक्ष निर्वाण लाडू अर्पित कियो गणिनी आर्यिकाश्री आर्षमति माता जी ने उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म पर प्रकाश डालते हुए कहा कि कहा मोक्ष मार्ग बहार कम भीतर ज्यादा है। हमारी दृष्टि बहार की तरफ है जबकि अन्तर्दृष्टि की और जाने की जरूरत है। आगे देख सकते हैं परंतु पीछे नहीं देख सकते ऊपर भी नहीं देख सकते हैं। व्यक्ति यहां बहा सब जगह दृष्टि दौड़ाता रहता है । अपनी आत्मा में लींन होना ही ब्रह्मचर्य है क्योंकि आत्मा को ब्रह्म कहा गया है। रात 7:00 बजे भक्तों ने श्रीजी की 108 दीपकों से मंगल आरती की साथ ही एक शाम बाबा पारसनाथ के नाम भजन संध्या आयोजित की गई। रिपोर्ट-मीडिया प्रभारी शुभम जैन

दशलक्षण पर्व के अंतिम दिवस पर जल यात्रा जुलूस निकाला

मनोज सोनी. शाबाश इंडिया

निंबाहेड़ा। दिगंबर जैन समाज के तत्वावधान में गुरुवार को दस लक्षण पर्व के अंतिम दिवस पर जलयात्रा जुलूस निकालकर आदिनाथ प्रभु के महा कलशाभिषेक एवं शांतिधारा कर पूजा अर्चना की गई। दिगंबर जैन समाज के प्रवक्ता मनोज सोनी के अनुसार गुरुवार दस लक्षण पर्व के दसवें दिवस पर श्रद्धालु जनों ने उत्तम ब्रह्मचर्य के अर्घ्य समर्पित कर आदिनाथ जिनालय से समाज अध्यक्ष सुशील काला के नेतृत्व में विशाल जलयात्रा जुलूस निकाला। दशलक्षण पर्व अंतर्गत 10 उपवास की तप आराधना कर रहे शशि जैन एवम्‌विशाल, निमिषा संघवी तपर्थियों के साथ मंदिर से निकला यह जलयात्रा जुलूस नगर के प्रमुख मार्गो से होता हुआ पुनः मंदिर परिसर पहुंचकर एक धर्मसभा में परिवर्तित हो गया जहां पर बड़ी संख्या में उपस्थित श्रद्धालुओं ने भगवान आदिनाथ के महाकलशाभिषेक एवं शांतिधारा कर विशेष धार्मिक कार्यक्रम का आयोजन संपन्न किया। समाज के सचिव मनोज पटवारी के अनुसार दस दिवसीय दस लक्षण पर्व का समापन एकम के महाकलशाभिषेक के साथ शनिवार को उत्तम क्षमा दिवस पर पारस्परिक क्षमा याचना पर्व मना कर संपन्न होंगे।

दस लक्षण पर्व के समापन पर हुए जिनेन्द्र प्रभु के अभिषेक

मनोज नायक. शाबाश इंडिया

मुरेना । दशलक्षण पर्व के समापन पर शहर के विभिन्न जैन मंदिरों में श्री जिनेन्द्र प्रभु के अभिषेक हुए । श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन पंचायती बड़ा मंदिर में श्री पार्श्वनाथ भगवान के प्रथम स्वर्ण कलश से अभिषेक करने का सौभाग्य विनोद जैन, धुर्व बंश जैन (तार वाले) भंडारी परिवार एवम प्रथम शांतिधारा करने का सौभाग्य राजेंद्र भंडारी, साकेत भंडारी, निकेत भंडारी परिवार एवम द्वितीय शांतिधारानेमीचंद देवानंद जैन खनेता परिवार को प्राप्त हुआ ।डॉ.मनोज जैन, अनिल जैन नायक, राजेंद्र जैन नंदपुरा, विमल जैन बघपुरा ने चार कलशों से श्री जी का अभिषेक किया । इस पुनीत अवसर पर अभिषेक जैन अनिकेत जैन आलोक प्रेस, पंकज मेडिकल, यतिंद्रकुमार संजय जैन लोहिया बाजार एवम एक गुप्तदान द्वारा वेदियों पर शीशे के गेट बनवाने की घोषणा की गई। अभिषेक की समस्त क्रियाएं सांगानेर ने आए हुए विद्वान सतीश शास्त्री ने सम्पन्न कराई । श्री चंद्रप्रभु पल्लीवाल जैन मंदिर लोहिया बाजार में प्रथम कलश से अभिषेक करने का सौभाग्य अनिल जैन शुभ जैन मोतीराम तेजसिंह जैन परिवार एवम फूलमाला ग्रहण करने का सौभाग्य पारस जैन लोहिया बाजार, शांतिधारा करने का सौभाग्य समस्त पुजारियों को प्राप्त हुआ । श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन चैत्यालय गढ़ी बालों के मंदिर में भी श्री जिनेन्द्र प्रभु के जलाभिषेक किए गए ।